Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

170
11/30

संस्कृति और संस्कृतियाँ

डॉ॰ लल्लनजी गोपाल

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

संस्कृति 11/30

और संस्कृतियाँ

डॉ॰ लल्लनजी गोपाल

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

संस्कृति और संस्कृतियाँ

[A BOOK ON GENERAL CULTURE]

डॉ. लल्लनजी गोपाल

एम. ए., डी. फिल. (इलाहाबाद), पी-एच. डी. (लन्दन), एफ. आर. ए. एस.

रीडर : इतिहास-विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

वाराणसी–१

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

A Book on General Culture
(SANSKRITI AUR SANSKRITIYAN)

[यूनेस्को के पेरिस कार्यालय के सहयोग से प्रकाशित]

Prepared with the Financial assistance of UNESCO

प्रथम संस्करण

जून : १९६४

मूल्य

1 रु. 50 पै.

प्रकाशक	मुद्रक
ओम्प्रकाश बेरी	श्रीकृष्णचन्द्र बेरी
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय	विद्यामन्दिर प्रेस (प्रा.) लि.
पो. बॉ. नं. ७०, पिशाचमोचन	डी. १५/२४, मानमन्दिर
वाराणसी–१	वाराणसी–१

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

11/30

प्रसिद्ध इतिहासकार

आदरणीय

डॉ० विश्वेश्वर प्रसाद

को

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रस्तावना

आज सारा संसार अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति की स्थापना की आवश्यकता को समझ रहा है। यह शान्ति केवल बाह्य रूप में सन्धियों और नियमों के द्वारा लादी नहीं जा सकती। इसके लिये यह आवश्यक है कि जीवन के सभी क्षेत्रों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव और मानव-प्रेम के विचार फैलें। इस प्रकार वर्तमान स्थिति में सबसे अधिक जरूरी यह है कि आदमियों के हृदय परिवर्तित हों। अन्यथा भाई चारे की भावना के सभी प्रयास स्थायी नहीं हो पायेंगे। ऐसी सहानुभूति और समता की भावना सच्चे ज्ञान पर ही खड़ी हो सकती है। यदि हम दूसरे देशों के लोगों को अच्छी प्रकार समझने लगें तो, प्रेम और भाई चारे के भावों के बढ़ने की अधिक संभावना होगी। किसी प्रदेश की संस्कृति का सही ज्ञान ही हमें वह अन्तर्दृष्टि दे सकता है, जिससे हम उस देश के लोगों के जीवन के आदर्शों के प्रकाश में उनकी व्यवस्थाओं और कार्यों को सहानुभूति से समझ सकें। प्रस्तुत पुस्तक में विश्व की प्रमुख संस्कृतियों की मुख्य विशेषताओं की सहायता से मानव-समाज में सांस्कृतिक सद्भाव की भावना को बढ़ाने के लिये सरल शैली और भाषा का प्रयोग किया गया है।

—ललनजी गोपाल

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अनुक्रम

अध्याय	विषय		पृ० स०
१.	संस्कृति का स्वरूप	...	११
२.	विश्व की प्रमुख संस्कृतियाँ	...	३३
३.	संस्कृति की नई व्यवस्था	...	९४

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

11/30

संस्कृति

और

संस्कृतियाँ

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

11/20

संस्कृति का स्वरूप

संस्कृति क्या है, इस संबंध में अनेक विचार हैं। इन विचारों के परस्पर भेद के कारण कभी-कभी संस्कृति के स्वरूप को समझने में परेशानी होती है। संस्कृति के लिये अंग्रेजी भाषा में कल्चर (Culture) शब्द का उपयोग होता है। कल्चर की परिभाषा भी विद्वानों ने अनेक प्रकार से की है, इस की कोई एक सुनिश्चित और सर्वमान्य परिभाषा नहीं है। इसीलिये हमारे लिये आवश्यक हो जाता है कि सर्वप्रथम हम संस्कृति के स्वरूप को स्पष्ट करने और ठीक से समझने का प्रयत्न करें।

कभी-कभी संस्कृति अथवा कल्चर शब्द सामाजिक गुण अथवा आकर्षण तथा बौद्धिक श्रेष्ठता के लिये आता है। इसी प्रयोग के अनुकूल ही अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि मेथ्यू आर्नाल्ड ने कल्चर को माधुर्य और प्रकाश कहा था। इसी प्रयोग से मिलता-जुलता किन्तु थोड़ा अधिक व्यापक संस्कृति शब्द का प्रयोग आदमी के नैतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास के रूप

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

में होता है। संस्कृत भाषा में संस्कृति शब्द परिष्कार अथवा परिमार्जन के लिये प्रयुक्त होता है। इसका अर्थ होता है किसी वस्तु के दोष अथवा उसकी गन्दगी को दूर कर, उसे साफ़ कर उसे और अच्छा बनाना। प्राचीन भारत में भाषाओं के नाम संस्कृत और प्राकृत इसी प्रकार थे। प्राकृतके अर्थ हैं : स्वाभाविक और सहज। यह भाषा जन-साधारण की भाषा थी; लेकिन शिष्ट वर्ग की भाषा 'संस्कृत' कहलाई। परिमार्जित और परिष्कृत भाषा होने के कारण इसका भेद प्राकृत भाषा से किया गया और इसका नाम संस्कृत रखा गया।

पुरातत्ववेत्ता संस्कृति शब्द का प्रयोग एक विशिष्ट और संकुचित अर्थ में करते हैं। बहुत पहले के समय के लोगों का वर्णन करने में लिखित, प्रामाणिक और तत्कालीन प्रमाणों के अभाव के कारण, वे जीवन के अनेक अंगों और समाज के कई पहलुओं के बारे में कुछ भी नहीं कह सकते। विशेष रूप से उन लोगों के आचार-विचार और विश्वासों के विषय में उन्हें पूर्ण रूप से मौन रहना पड़ता है। प्राचीन काल के उन लोगों के विषय में वे वही बातें कह सकते हैं, जो उन्हें उस समय के स्थूल और शेष बचे हुए प्रमाणों

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के रूप में मिलती हैं। इन अवशेषों को पुरातत्ववेत्ता उद्योग (Industries) कहते हैं और इनके सामूहिक ज्ञान को ही वे उस समय और स्थान की संस्कृति कहते हैं। इन उद्योगों में प्रायः उन लोगों के हथियार, उनके बर्तन और उन की बनाई मूर्तियाँ ही प्रमुख होती हैं।

नृतत्त्ववेत्ता भी संस्कृति शब्द का प्रयोग एक विशेष अर्थ में करते हैं। किसी समाज की संस्कृति से उन का तात्पर्य उसके सभी लोगों के सभी कथित अथवा अकथित शील अथवा व्यवहार और उससे उत्पन्न उसके मूर्त अथवा अमूर्त रूपों से होता है। लेकिन संस्कृति की परिभाषा देने में सभी नृतत्ववेत्ता एकमत नहीं हैं।

कुछ लोग संस्कृति को सामाजिक वसीयत मानते हैं, जो कि व्यक्ति को समाज से प्राप्त होती है। वे संस्कृति से उन विश्वासों, विचारों, आचारों, नियमों, नैतिक आदर्शों, कलाओं तथा दूसरी योग्यताओं और कौशलों का संकेत समझते हैं, जो व्यक्ति समाज के सदस्य के रूप में प्राप्त करता है। इसी परिभाषा को और व्यापक और स्पष्ट बनाते हुए कुछ लोग कहते हैं कि यह सामाजिक वसीयत भौतिक और अभौतिक दोनों

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रकार की होती है। इस प्रकार वे संस्कृति को जीवन का पूरा ढँग बतलाते हैं और इसमें बौद्धिक, सामाजिक और भौतिक सभी बातों को रखते हैं। कभी-कभी संस्कृति का अर्थ सामाजिक परम्पराओं को पहले की पीढ़ियों से पाना और बाद की पीढ़ियों को देना समझा जाता है। इन्हीं परम्पराओं से समाज का जीवन बना रहता है। कुछ लोग संस्कृति को हस्तान्तरित हो सकनेवाला ज्ञान मानते हैं और उस की परिभाषा में सामाजिक व्यवस्था और चिह्नों के रूप में परम्परागत अर्थों के समूह को रखते हैं। संस्कृति का वर्णन सामाजिक जीवन के अंगों के रूप में नहीं बल्कि उनकी व्यवस्था के रूप में किया जाता है।

इतिहास का विद्यार्थी संस्कृति शब्द के अन्तर्गत किसी समाज के जीवन और उसकी कृतियों का अध्ययन करता है। कभी-कभी इतिहासकार संस्कृति की व्याख्या करते समय सामाजिक जीवन के बाह्य स्वरूपों का ही उल्लेख करते हैं। वे उन के पीछे छिपी हुई किसी धारणा अथवा परम्परा को न तो स्वीकार ही करते हैं और न उसको महत्व ही देते हैं; किन्तु यह उचित नहीं है। किसी भी संस्कृति के स्वरूप के निर्धारण में उस समाज के आदर्श और निष्ठाओं का महत्व

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सब से अधिक है। ये आदर्श ही जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं का महत्व निर्धारित करते हैं। इन आदर्शों के अन्तर्गत हम उस समाज के विचारों, भावनाओं और प्रयोजनों का समावेश करते हैं। ये आदर्श समाज की सभी संस्थाओं और कार्यों के लिये एक प्रयोजन प्रस्तुत करते हैं। इनके अभाव में समाज के सभी कार्य बिना किसी प्रयोजन और व्यवस्था के तथा अर्थहीन हो जायेंगे। जीवन के सभी कार्यों को एकसूत्र में पिरो कर ये उनमें एकता उपस्थित करते हैं। यदि ये आदर्श न हों, तो हम किसी भी संस्कृति के स्वरूप को दिखलानेवाले कार्यों और सामग्रियों में समय-समय पर होनेवाले परिवर्तनों को न समझ सकेंगे। ये आदर्श संस्कृति की एकता और उसका निरंतर प्रवाह बनाये रखते हैं। इस प्रकार किसी भी समाज की संस्कृति में उस की सामाजिक चेतना का बहुत ऊँचा स्थान है। समाज के जीवन में इसका महत्व कुछ उसी प्रकार का है जैसा कि किसी भी प्राणी के लिये उसका व्यक्तित्व। मनुष्य के व्यक्तित्व में उसके आदर्श का मुख्य महत्व है। ये आदर्श ही उसके कार्यों को एकता और प्रयोजन देते हैं और उसके कार्यों का स्वरूप निर्धारित करते हैं। इसी प्रकार संस्कृति जो वास्तव में जीवन के प्रति

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

किसी विशिष्ट समाज का दृष्टिकोण है और जिसके अन्तर्गत उसकी निष्ठाओं और मूल्यों का समावेश है, उसके कार्यों और उसकी व्यवस्थाओं में दिखलायी पड़ती है। यह आदर्श विभिन्न प्रकार के विचारों भावनाओं और आचरणों के रूप में हमारे सम्मुख आता है। इसीलिये यद्यपि संस्कृति के बाह्य स्वरूप में अन्तर भी आ जाय, तो भी संस्कृति की यह दृष्टि और प्रेरणा उसकी गति को एकता देती है।

सामाजिक दृष्टिकोण और आदर्शों में आध्यात्मिक विचार और परम्पराएँ विशेष महत्व रखती हैं। इसी कारण किसी भी समाज की संस्कृति को गति और प्रेरणा देनेवाले तत्वों में उस समाज के आध्यात्मिक विचारों को अवश्य ध्यान में रखना होगा। प्राचीन संस्कृतियों में तो इन धार्मिक आदर्शों का महत्व और भी अधिक था। प्राचीन काल में धर्म जीवन का एक बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण अंग होता था।

संस्कृति का बाह्य स्वरूप हमें उसकी कला और साहित्य की कृतियों और उसकी संस्थाओं में प्रमुख रूप से देखने को मिलता है। इनके स्वरूप का निर्धारण उस संस्कृति के मूल आदर्शों के अनुसार होता है। एक का अस्तित्व दूसरे के लिये आवश्य है। एक

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ओर तो संस्कृति के आदर्श उसके बाह्य स्वरूपों का रूप निश्चित करते हैं और दूसरी ओर इन बाह्य स्वरूपों के द्वारा ही सामाजिक चेतना अथवा मानस को अपने को प्रकट करने का अवसर मिलता है। कभी-कभी इन दोनों के संबंध को स्पष्ट करने के लिये आत्मा और शरीर का उदाहरण लिया जाता है। आत्मा शरीर को प्रेरणा और उसके कार्यों को प्रयोजन देती है; लेकिन साथ ही शरीर के माध्यम से ही अशरीरी आत्मा अपने को बाहर प्रकट करती है।

किसी भी समाज की संस्कृति का वर्णन करने में उसकी भौतिक कृतियों का भी विचार किया जाता है। उदाहरण के लिये हम उस समाज के औजार और हथियारों का उल्लेख कर सकते हैं। इन सभी का स्वयं मेंही कोई महत्व नहीं होता। इनका विचार केवल इसी-लिये किया जाता है कि संस्कृति के आदर्श अपने को इनके द्वारा प्रकट करते हैं। ये आदर्श इन वस्तुओं को सार्थकता देते हैं और संस्कृति के अन्य उपकरणों के साथ इनकी एकता स्थापित करते हैं। उस सांस्कृतिक प्रयोजन और चेतना के कारण ही ये बाह्य उपकरण सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम बनते हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

संस्कृति का स्वरूप समझने के लिये यह आवश्यक है कि हम उसकी तुलना सभ्यता से करें। इस तुलना के द्वारा ही दोनों शब्दों के अर्थ में जो सूक्ष्म अन्तर है, वह स्पष्ट होता है और हम संस्कृति के स्वरूप को जान पाते हैं। दोनों में समानता होने पर भी दोनों एक नहीं हैं। संस्कृति का स्वरूप सभ्यता से भिन्न है। कहा गया है कि सभ्यता वह चीज है, जो हमारे पास है; और संस्कृति वह गुण है, जो हममें है। संस्कृति के जो बाह्य रूप हैं, जिन भौतिक उपकरणों में संस्कृति अपने को व्यक्त करती है, सभ्यता के अन्तर्गत प्रायः उन्हीं का समावेश होता है। इसी प्रकार किसी भी सभ्यता को जो आदर्श और प्रेरणा देनेवाले विचार हैं, वही संस्कृति का वास्तविक स्वरूप हैं। सभ्यता किसी समाज की भौतिक उन्नति और उसके द्वारा संग्रहीत सुखों के उपकरणों की ओर संकेत करती है, जबकि संस्कृति उसके मन और आत्मा के विकास के प्रतीक उसके आदर्शों और विचारों में प्रकट होती है। सभ्यता वह है जो बाहर है; संस्कृति वहहै जो भीतर है। इस प्रकार किसी समाज का भोजन, उसकी पोशाक, मकान और सवारी उसकी सभ्यता को बतलाती है; किन्तु इनके निर्माण के पीछे जो विचार और भाव

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हैं, जिनके कारण इनका निर्माण हुआ, वे संस्कृति के सूचक हैं।

साधारणतया सभ्यता और संस्कृति की प्रगति की दिशा एक ही होती है। सभ्यता की प्रगति के साथ संस्कृति में भी प्रगति होती है और इसी प्रकार संस्कृति की प्रगति के कारण सभ्यता की प्रगति भी संभव होती है। लेकिन यह नियम हर जगह लागू नहीं होता। जैसा कि हम ऊपर देख चुके हैं, सभ्यता और संस्कृति में एक मौलिक अन्तर है। इसीलिये यह आवश्यक नहीं है कि एक समाज, जिसने सभ्यता के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की हो, वह सांस्कृतिक दृष्टि से भी समुन्नत हो। इसी प्रकार संस्कृति के क्षेत्र में बहुत ऊँचे उठने पर भी कोई समाज सभ्यता के क्षेत्र में पिछड़ा हुआ रह सकता है। हम अपनी बात को स्पष्ट करने के लिये प्राचीन काल के दो उदाहरण देते हैं। उपनिषद् काल में सांस्कृतिक आदर्शों की दृष्टि से भारत में उल्लेखनीय प्रगति हुई; किन्तु सभ्यता के भौतिक अवशेषों से मालूम होता है कि भौतिक सुखों को एकत्रित करने में भारत उतना आगे नहीं बढ़ पाया था। दूसरी ओर असीरियन सभ्यता भौतिक दृष्टि से उस युग के अनुसार बहुत ही बढ़ी-चढ़ी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हुई थी; किन्तु सांस्कृतिक आदर्शों और मान्यताओं को देखने पर हम उन्हें बहुत ही पिछड़ा हुआ पाते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सभ्यता स्थूल है और संस्कृति सूक्ष्म है। संस्कृति सभ्यता के अन्दर उसी प्रकार स्थित है, जैसे सुगन्ध फूल में रहती है।

ऊपर के विवेचन से हमने देखा कि किसी भी संस्कृति केस्वरूप में दो प्रमुख अंग होते हैं—प्रथम, उस का आन्तरिक रूप, जोकि उसके स्वरूप की रचना में प्रमुख तत्व होता है और दूसरा, उसका बाह्य रूप जोकि आन्तरिक स्वरूप की विशेषताओं का प्रतिबिम्ब होता है। आन्तरिक स्वरूप एक ही जैसा लहता है, उसमें कोई मूलभूत परिवर्तन सरलता और शीघ्रता से नहीं होता। बाह्य स्वरूपों में अन्तर कई कारणों से आ जाते हैं। संस्कृति को केवल उसके बाह्य स्वरूप के अनुसार समझ कर हम संस्कृति का सही स्वरूप नहीं समझ सकते। इसके लिये यह आवश्यक है कि हम उसके प्रेरणा देने-वाले आदर्शों अथवा उसके आन्तरिक स्वरूप को ठीक से समझें।

संस्कृति और व्यक्ति में गहरा संबंध है। समाज व्यक्तियों का समूह है, इसलिये यह उचित ही है कि उस समाज की संस्कृति का उसके सदस्य व्यक्तियों पर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रभाव पड़े। समाज में दो प्रकार के व्यक्ति होते हैं—साधारण और असाधारण। अधिकांश व्यक्ति साधारण होते हैं। साधारण व्यक्तियों के लिये संस्कृति मार्ग-दर्शक का काम करती है। संस्कृति साधारण व्यक्तियों के लिये उचित कर्तव्य और अकर्तव्य का निर्देश करती है और उसके कार्यों के लिये संस्थाएँ और व्यवस्थायें बनाती है। इस प्रकार संस्कृति साधारण व्यक्तियों के लिये उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करके, उनका निजी और सामाजिक अस्तित्व बनाये रखती है। इस लाभ को पाने के लिये साधारण व्यक्ति को संस्कृति के आदर्शों और व्यवस्थाओं का पालन करके और अपनी स्वतंत्रता को सीमित करना पड़ता है। इस प्रकार संस्कृति साधारण व्यक्ति का पथ-प्रदर्शन करती है और साथ ही उसे बाँधती भी है।

लेकिन असाधारण व्यक्ति संस्कृति में कुछ परिवर्तन लाने का प्रयत्न करते हैं। वे संस्कृति का नाश या अन्त नहीं कर सकते। उन्हें भी संस्कृति की सीमाओं के भीतर ही कार्य करना होता है। लेकिन वे संस्कृति की सीमाओं के भीतर अपने नये विचारों का प्रयोग करते हैं। ऐसे व्यक्ति संस्कृति के जीवन के लिये आवश्यक हैं, अन्यथा संस्कृति स्थिर हो कर समाप्त हो

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जायेगी। इन असाधारण व्यक्तियों के द्वारा जो नई दिशा बतलाई जाती है, वह भी अधिकतर संस्कृति में निहित रहती है। ये व्यक्ति इन्हें प्रकाश में ला कर संस्कृति को नई गति और नई दिशा देते हैं।

विचारकों ने प्रायः इस प्रश्न की ओर ध्यान दिया है कि संस्कृतियों का विकास कैसे होता है? विकास के सिद्धान्त के रूप में विचारकों ने कई मत रखे हैं। एक मत तो स्वतःविकास (Evolutionism) के सिद्धान्त का है। डार्विन और स्पेन्सर नाम के विचारकों के प्रभाव में पहले के युग में लोग यह मानने लगे थे कि स्वतःविकास करना प्रत्येक वस्तु का स्वाभाविक गुण है। इसी प्रकार हर एक समाज भी विकास की ओर स्वयंमेव बढ़ता है। इस विचार के साथ ही एक दूसरा विचार भी जुड़ा हुआ था। लोग यह मानते थे कि सभी व्यक्तियों में बुद्धि एक जैसी है। इसलिये लोगों ने यह निष्कर्ष निकाला कि यदि कोई दो समाज एक ही जैसी परिस्थिति में हैं, तो उन की सांस्कृतिक प्रगति की दिशा एक ही जैसी होगी। दो संस्कृतियों में एक ही जैसा विकास देखने पर ये विचारक यह मानते थे कि ये स्वतंत्र रूप से स्वाभाविक रूप से स्वतः विकसित हुए हैं। इन विचारकों ने संस्कृति के विकास

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

की एक जैसी कई अवस्थाएँ मानी जो समान स्थिति के सभी समाजों में एक प्रकार से लागू की गयीं।

कुछ विचारक स्वतःविकास के सिद्धान्त को ही थोड़ा-सा परिवर्तन करके प्रस्तुत करते हैं। उन का कहना है कि संस्कृति का विकास सदैव और निरन्तर ऊर्ध्वगामी नहीं रहता। संस्कृति का कोई तत्व कभी-कभी विकास करते-करते एक कर दूसरी दिशा में बढ़ने लगता है; किन्तु फिर उसका विकास पहले की हुई प्रगति की दशा से ऊपर की स्थिति की ओर ही होता है। इस प्रकार विकास की गति घुमावदार होती है।

संस्कृति के विकास का दूसरा प्रमुख सिद्धान्त प्रसार (Diffusionism) का है। विचारकों ने इतिहास के दर्शन से और अपने समय की वास्तविक स्थिति को देख कर यह कहा कि यदि दो संस्कृतियाँ एक-दूसरे के निकट रहती हैं, तो उन के एक-दूसरे के सम्पर्क में आने की बहुत अधिक संभावना होती है। ऐसी स्थिति में स्वाभाविक यही है कि उन दोनों संस्कृतियों में समान कोई सांस्कृतिक तत्व एक के द्वारा ने दूसरे से लिया गया होता है। संस्कृति का प्रसार कभी-कभी इसलिये भी होता है कि कुछ समाज विशेष रूप से अधिक भ्रमण-

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शील होते हैं और इस प्रकार वे अपने से दूर रहनेवाले समाजों की संस्कृतियों को प्रभावित कर सकते हैं।

कुछ विचारकों ने स्वतःविकास और प्रसार के सिद्धान्तों को संयुक्त करके कहा कि संस्कृति के विशिष्ट तत्व विभिन्न समयों में संसार के विभिन्न भागों में उत्पन्न हुए और वहाँ से अन्य संस्कृतियों द्वारा ग्रहण किये गये। इस प्रकार प्रसार का कार्य निरन्तर चलता रहता है और किसी भी संस्कृति में दूसरी संस्कृतियों से लिये गये तत्वों की कई सतहें देखी जा सकती हैं। किन्तु इन विचारकों ने संस्कृति के स्वरूप के विषय में एक गलत धारणा स्वीकार की। इन्होंने संस्कृति को केवल उसके बाह्य स्वरूपों के साथ एक किया और उसके भीतर के प्रेरणा देनेवाले आदर्शोंको अधिक महत्व नहीं दिया।

कुछ विचारकों ने यह कहा कि भौगोलिक बाधाओं के कारण सांस्कृतिक तत्व बहुत दूर के प्रदेशों तक साधारणतया नहीं जाते। उन्होंने उन सांस्कृतिक क्षेत्रों की कल्पना की, जिनके भीतर ही संस्कृतियों का परस्पर लेन-देन होता है।

ये सभी सिद्धान्त एक विशेष दृष्टिकोण से ही सही हैं। वे पूर्ण रूप से सही नहीं हैं। संस्कृति के विकास में स्वतःविकास और प्रसार दोनों के ही सिद्धान्त

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लागू होते हैं। एक ओर तो स्थान की दूरी और भेद के विचार प्रसार के मार्ग में बाधक होते हैं। दूसरी ओर दूसरी संस्कृतियों से तत्व लेने के कारण विकास की गति हमेशा सीधी और सरल नहीं रहती। इसलिये यह कहना कि दोनों में से किसी एक सिद्धान्त को मान्यता दी जाय, गलत है। संस्कृति के विकास में दोनों ही तत्व काम करते रहते हैं। परिस्थिति विशेष का अध्ययन करके ही किसी एक मत का उसके लिये उपयोग करना चाहिए। यह सिद्धान्त का नहीं बल्कि व्यावहारिक अध्ययन का विषय है।

अब हमें यह देखना है कि किसी संस्कृति की उत्पत्ति और विकास के पीछे क्या-क्या प्रमुख कारण होते हैं। कुछ विचारक संस्कृति के जन्म और विकास के कारणों में भौगोलिक दशा को विशेष महत्व देते हैं। यह सच है कि संस्कृति के बाह्य उपकरणों का स्वरूप भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार निर्धारित होता है। बाह्य प्रकृति अपनी असुविधाओं के द्वारा उस समाज को चुनौती-सी देती है और समाज प्रकृति पर अपना अधिकार करने और उसको अपने वश में लाने के लिये प्रयत्न करता है। किन्तु बाह्य प्रकृति की चुनौती अन्तर्मन के विचार, भावनाओं और आदर्शों के स्वरूप

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

को बनाने में अधिक प्रभावपूर्ण नहीं हो सकती। इस प्रकार संस्कृति के मूल तत्वों पर भौगोलिक परिस्थितियों का प्रभाव स्थायी और मूलभूत नहीं हो सकता।

मार्क्सवादी विचारक संस्कृति के स्वरूप का निर्धारण करनेवाले कारणों में प्रमुख स्थान विज्ञान-कौशल की उन्नति और आर्थिक संबंधों को देते हैं। विज्ञान-कौशल की प्रगति के अनुसार उत्पादन के साधन होते हैं। इन साधनों के द्वारा ही सामाजिक संबंधों का स्वरूप बनता है। सामाजिक और राजनीतिक विचार और संस्थाएँ भी सामाजिक संबंधों के प्रभाव से बनती हैं। सामाजिक चेतना का रूप भी इन विचारकों के अनुसार आर्थिक संबंधों से प्रभावित होता है। यह सच है कि सामाजिक जीवन में आर्थिक परिस्थिति का महत्वपूर्ण स्थान है; और इसलिये समाज की विभिन्न संस्थाओं का और संस्कृति का बाह्य स्वरूप आर्थिक संबंधों से बहुत अधिक प्रभावित होता है। किन्तु मार्क्सवादी जीवन के एक अंग को, वह चाहे कितना ही महत्वपूर्ण क्यों न हो, पूरा जीवन समझने की भूल करते हैं। सामाजिक जीवन के अनेक अंग होते हैं, जो आर्थिक कारणों से भी प्रभावित होते हैं लेकिन प्रायः उनके विकास की निजी दिशा होती है। आर्थिक कारण

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

संस्कृति के प्राण आदर्शों और प्रेरणाओं के निर्माण में अधिक प्रभावोत्पादक नहीं हो सकते। इस प्रकार यद्यपि आर्थिक संबंधों से संस्कृति का बाह्य स्वरूप बहुत अधिक प्रभावित होता है, उसका आन्तरिक रूप आर्थिक प्रभाव से बहुत अधिक अछूता रहता है।

संस्कृति के स्वरूप के निर्माण में जिन प्रभावों को सबसे अधिक महत्व मिलना चाहिए, वे उसकी प्रेरणायें और आध्यात्मिक विचार हैं। जब कि बाह्य अथवा भौतिक बातें क्षणभंगुर हैं, आत्मा की स्थिति स्थायी है। संस्कृति के स्वरूप में आध्यात्मिक विचार स्थायी महत्व के होते हैं। इन आदर्शों और भावों में भी प्रमुख महत्व इस बात का है कि वह समाज जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य क्या मानता है और उस परमार्थ सुख की प्राप्ति के लिये उसने क्या प्रयत्न किये हैं और उसको उस दिशा में कितनी सफलता मिली है? हम कभी-कभी यह भूल जाते हैं कि मनुष्य में केवल बुद्धि ही नहीं है, उसके जीवन का एक भाव-पक्ष भी होता है। ये भावनाएँ और कल्पनाएँ भी, जो प्रायः तर्क और बुद्धि की कसौटी पर असंगत और व्यर्थ मालूम पड़ें, मनुष्य के कार्यों और संस्थाओं के निर्माण में प्रभावोत्पादक होती हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस प्रकार हम देखते हैं कि मनुष्य के व्यक्तित्व के बाह्य और आन्तरिक जीवन के अनुकूल ही संस्कृति के विकास में दो प्रमुख कारण होते हैं—बाह्य और आन्तरिक। जब कि परमार्थ सुख के संबंध में उसके विचार और उस की प्राप्ति के प्रयत्न संस्कृति का स्थायी रूप निर्धारित करते हैं, उसके बाह्य जीवन की आवश्यकताएँ संस्कृति के स्थूल स्वरूप के निर्माण में महत्वपूर्ण होती हैं।

किसी भी संस्कृति के विकास के लिये दूसरी संस्कृति के प्रभाव भी महत्वपूर्ण कारण होते हैं। यदि ऐसे प्रभाव न हों, तो संस्कृति का विकास रुक जायेगा। एक सजीव संस्कृति अपनी आवश्यकताओं के अनुसार बाहर से तत्व ले कर आगे बढ़ती रहती है। जो संस्कृति इस प्रकार अपने में परिवर्तन न ला सके, उसका आगे का जीवन सन्दिग्ध हो जाता है। लेकिन यहाँ हमें यह याद रखना चाहिए कि कोई भी संस्कृति बाहर से तत्व लेने में बिल्कुल मनमानी नहीं करती। वास्तव में वह उन्हीं बाह्य प्रभावों को लेती है, जो उसकी आवश्यकताओं और उसके स्वयं के स्वरूप के अनुकूल हो। इस प्रकार ये बाह्य प्रभाव भी संस्कृति के आन्तरिक जीवन और उसके स्थायी आदर्शों के अनुसार होते हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कोई भी संस्कृति किसी नितान्त विदेशी प्रभाव को सरलता से नहीं ग्रहण करती। यदि वह ऐसा करती है, तो इसके यह अर्थ हुए कि उस संस्कृति का जीवन समाप्त हो गया और उसके स्थान पर एक नई संस्कृति का जन्म हुआ है।

संस्कृतियों की अपनी स्वयं की विशेषताएँ होती हैं। उनके सभी अंगों और स्वरूपों में हमें एकता और एकरूपता दिखलाई पड़ती है, जिसके कारण उन्हें पहचानने में कठिनाई नहीं होती। क्या कारण है कि संस्कृति के सभी तत्व संगठित और सम्मिलित होकर एकता उत्पन्न करते हैं? इस संबंध में कोई एक सुनिश्चित कारण नहीं बतलाया जा सकता। विद्वानों ने किसी भी संस्कृति के संगठित और एकरूप स्वरूप को समझाने के लिए कई कारण बतलाये हैं। एक सुझाव है कि संस्कृति के सभी तत्व मानव-समाज के हित के लिये हैं। इस प्रकार एक ही लक्ष्य की पूर्ति के लिये होने के कारण वे परस्पर संबंधित होते हैं और इस प्रकार वे सभी मिल कर सुसंयत और सुगठित इकाई के रूप में दिखलाई पड़ते हैं। कुछ विचारक यह भी कहते हैं कि ऐसी एकरूपता समाज के अस्तित्व के लिये आवश्यक है और इसीलिये यह आदर्श व्यवहार

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

में भी परिणत होता है। एक सुझाव यह भी है कि संस्कृति के विभिन्न तत्व एक सुनिश्चित और स्थायी योजना में बँधे होते हैं और यह सन्तुलन अधिक समय के लिये नहीं बिगड़ सकता। यह सन्तुलन उस संस्कृति की अपनी विशेषता, प्रेरणा और व्यक्तित्व के कारण संभव होता है। इसे उस संस्कृति की प्रतिभा कहा जा सकता है और यह उसके सभी तत्वों को समान रूप से प्रभावित करके उनमें एकरूपता और सन्तुलन लाती है। कभी-कभी इसी प्रतिभा को साधारण प्रेरणा और जीवन की विधि भी कहा जाता है।

विश्व के रंगमंच पर हम अनेक संस्कृतियों के दर्शन करते हैं। प्राचीन काल में भी अनेक संस्कृतियों का जन्म हुआ। इनमें से कुछ तो अपने समीप की संस्कृतियों को किसी रूप में प्रभावित करके समाप्त हो गईं और अब केवल इतिहास की एक भूली कहानी रह गई हैं। इसके विरुद्ध कुछ संस्कृतियाँ ऐसी भी हैं, जो अपने परिवर्तित रूप में आज भी विद्यमान हैं और जिन का संसार की सभ्यता के निर्माण में उल्लेखनीय योगदान है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विश्व-शान्ति और विश्व-प्रेम के भावों को बढ़ाने में इन संस्कृतियों का परिचय सहायक है। इन संस्कृतियों के विषय में हमारे ज्ञान की वृद्धि के साथ ही हम में उनके लिए प्रेम और सद्भाव के भी विचार बढ़ सकते हैं। कुछ लोग यह कह सकते हैं कि यह आवश्यक नहीं है। यह बात कि हम अपने पड़ोसी को जानते हैं, हमें इस बात के लिये बाध्य नहीं करती कि हम उससे प्रेम भी करें। यह ठीक तो है किन्तु इस तर्क में एक भूल भी है। जिस वस्तु का हमें कोई ज्ञान नहीं है उससे हम में एक अकारण भय और आशंका रहती है। अन्धकार से डरने के पीछे यही भाव है। लेकिन यदि हम किसी वस्तु के विषय में कुछ जानते हैं, तो हममें ऐसे अकारण भय की भावना का जन्म नहीं होगा। निकट का सम्पर्क और ज्ञान उस वस्तु के लिये हममें एक आत्मीयता का विचार उत्पन्न कर सकता है, जो समुचित परिस्थिति और उपायों के द्वारा विश्व-प्रेम और विश्व-बन्धुत्व की भावना का प्रबल पोषक बन सकता है।

विश्व की अन्य संस्कृतियों के अध्ययन की दूसरी आवश्यकता यह है कि इससे मौजूदा भेद के भावों का अन्त हो सकता है। हम इस अध्ययन से देखते हैं कि

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

संसार की विभिन्न संस्कृतियों में परस्पर सांस्कृतिक तत्वों का आदान-प्रदान होता रहा है। इस प्रकार कटुता और भेद के भाव कम होंगे और उनके स्थान पर भाई-चारे और प्रेम के विचार बढ़ेंगे।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विश्व की प्रमुख संस्कृतियाँ

इस छोटी-सी पुस्तक में हमारे लिये यह सम्भव नहीं है कि हम विश्व की सभी संस्कृतियों के विकास की कहानी प्रस्तुत करें। यहाँ हम केवल कुछ प्रमुख संस्कृतियों का वर्णन करके यह दिखलायेंगे कि यह विषय कितना रोचक, ज्ञान से भरा और सभी के लिये अत्यावश्यक है।

अपने अध्ययन की सुविधा के लिये हम इन संस्कृतियों को चार भौगोलिक प्रदेशों में बाँटेंगे। पहला जिसे आज 'निकट पूर्व' कहा जाता है और जिस में हम मेसोपोटैमिया और मिस्र को रख सकते हैं; दूसरा 'दक्षिणी एशिया', जिसमें भारत प्रमुख है; तीसरा योरप, जिस का प्रारम्भ ग्रीस और रोम की संस्कृतियों से हुआ है और चौथा 'सुदूर-पूर्व,' जिसमें प्रमुख महत्व चीन का है।

सबसे पहले हम निकट-पूर्व की संस्कृतियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करेंगे। विश्व के इतिहास में

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सर्वप्रथम एक सुनिश्चित संस्कृति का विकास आज से लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व मिस्र में हुआ था। यह नील की घाटी के ऊपरी और निचले भागों में रहने वालों के परस्पर मिलने से उत्पन्न हुई थी। ईसा पूर्व १५०० के लगभग मिस्र का साम्राज्य सीरिया तक फैला हुआ था; किन्तु हित्ती और असीरियन लोगों के आक्रमण के कारण इसका अन्त हो गया। यद्यपि आधुनिक मिस्र की संस्कृति को इस गौरवपूर्ण अतीत की स्मृति नहीं रही थी, फिर भी प्राचीन काल में समीप के देशों ने संस्कृति के अनेक तत्व मिस्र से लिये थे। कुछ विद्वान् इस दृष्टि से मिस्र का इतना अधिक महत्व मानते हैं कि वे संसार के सभी देशों की संस्कृतियों का मूल अन्त में मिस्र में ही ढूँढ़ते हैं। मिस्र में ही सबसे पहले सिंचाई के लिये प्रबंध किया गया। बड़े-बड़े पिरामिडों के बनाने में मिस्र के लोगों ने अपने गणित के ज्ञान का उपयोग किया। इन्होंने ही पहली बार सूर्य के अनुसार पंचाङ्ग बनाये। इन्होंने दैनिक जीवन में सुख-सुविधाओं, भोग-विलास और प्रसाधन के क्षेत्र में अच्छी उन्नति की थी। उन्होंने चित्र-संकेत और वर्णों के मिश्रण से बनी हुई लिपि का प्रयोग किया। इन्होंने ही एक विशेष प्रकार के पत्र के ऊपर लिखने

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

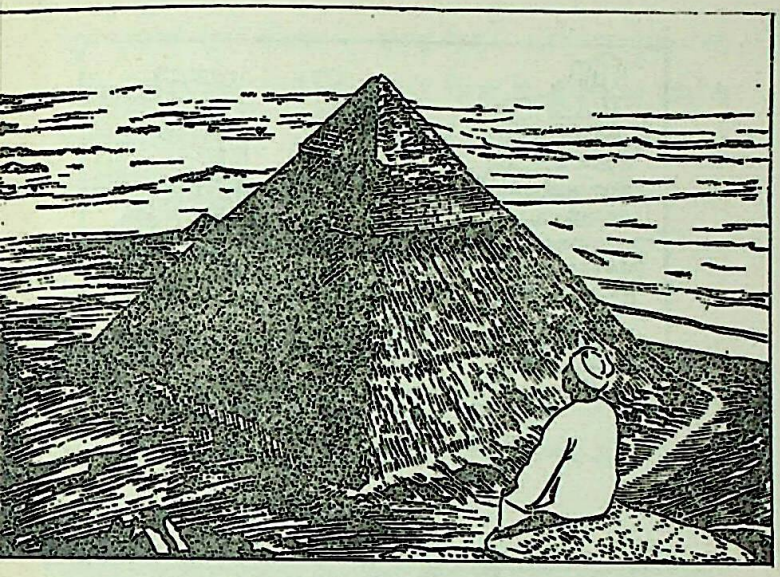

मिस्र का पिरामिड

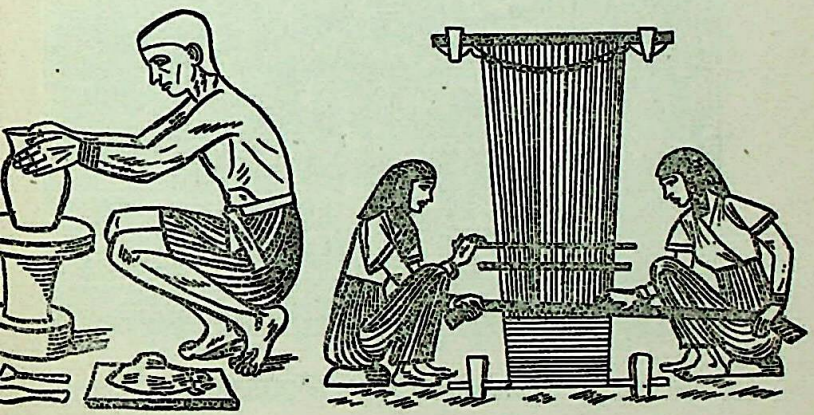

प्राचीन मिस्र के कुछ उद्योग

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

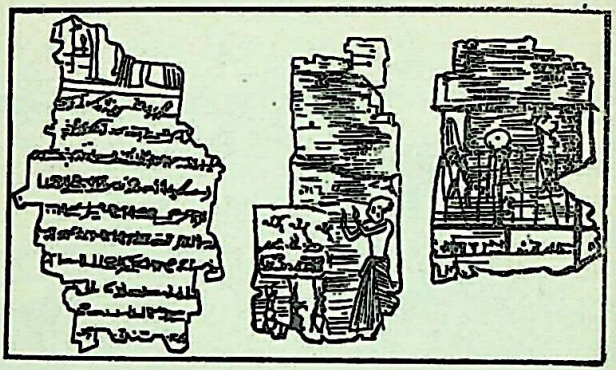

सुमेर की प्राचीन चित्र-लिपि

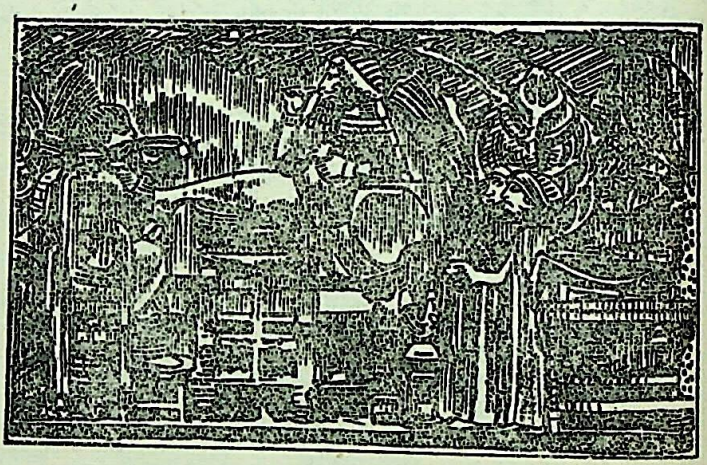

प्राचीन बेबीलोनिया की भवन-निर्माण-कला

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

का चलन शुरू किया। वस्त्र बुनने और धातुओं की बनी वस्तुओं के उपयोग में भी मिस्र के लोगों ने विशेष उन्नति की थी। मिस्र में ही हमें सर्वप्रथम व्यक्तिगत तथा सामाजिक औचित्य और अनौचित्य की भावना की व्यवस्था, सामाजिक न्याय की माँग, एक-पत्नीव्रत का प्रचलन, एकेश्वरवाद की भावना और नैतिक दर्शन के लेख मिलते हैं। मिस्र की संस्कृति की बहुत-सी बातें फोनेशिया, सीरिया, क्रीट, यूनान और रोम के निवासियों के माध्यम से सम्पूर्ण मानव-संस्कृति की अंग बन गई हैं।

दजला और फ़रात की घाटियों में सुमेरियन जाति के लोगों ने संस्कृति का जो विकास किया, उसे उनके बाद आने वाले बेबीलोनियन और असीरियन लोगों ने ग्रहण कर के विश्व की संस्कृति को प्रदान किया। इन्होंने ही कीलाक्षरों वाली लिपि को जन्म दिया। इन्हें ही सर्वप्रथम मूल्य के निर्धारण के लिये सोने और चाँदी के प्रयोग, सबसे प्राचीन व्यापारिक सट्टों और ऋण-व्यवस्था, सबसे प्राचीन पुस्तकालय और विद्यालय, सृष्टि और प्रलय की प्राचीनतम कथाओं और गुम्बद तथा गुम्बज के सबसे पहले प्रयोग का श्रेय प्राप्त है। यह साठ की संख्या की सहायता से गणना करते

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

थे। इसी कारण इन्होंने वृत्त को ३६०° में बाँटा। इन्होंने ही एक घंटे को साठ मिनट और एक मिनट को साठ सेकेण्ड में बाँटा।

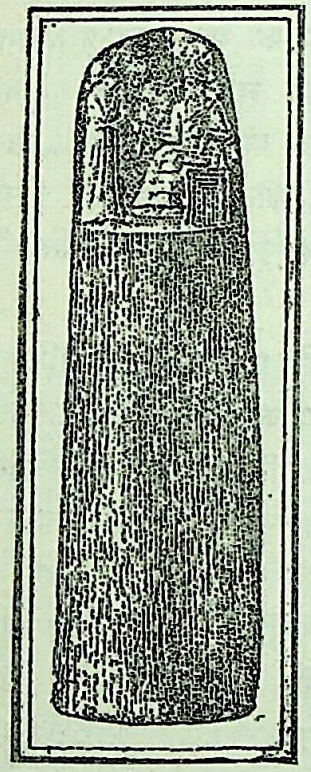

हम्मूरावी का स्मारक

बेबीलोनिया की संस्कृति बहुत अधिक मौलिक न होते हुए भी विश्व-संस्कृति में कई महत्वपूर्ण विकासोंके लिये उल्लेखनीय है। बेबीलोनिया के प्रसिद्ध नरेश हम्मूराबी ने जो विधान-संहिता बनाई, वह प्राचीन काल की उपलब्ध संहिताओं में सबसे अधिक प्रसिद्ध है और बाद की संहिताओं के निर्माण की प्रेरणा बनी है। इन लोगों का दृष्टि-कोण वैज्ञानिक था और कई विद्याओं और शास्त्रों के अध्ययन की इन्होंने नींव डाली। इन का समय का विभाजन—मास, सप्ताह,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दिन, घंटा, मिनट और सेकेण्ड में आज भी प्रयुक्त होता है। साहित्य के क्षेत्र में भी महाकाव्य और विशेष प्रकार के गीतों को इन्होंने जन्म दिया। यहूदियों की पौराणिक कथाएँ भी बेबीलोनिया से ही ली गई हैं। यूनानियों ने कई धातुओं, ग्रहों, तोल, वंजन, वाद्यों और औषधियों के नाम बेबीलोन से ही लिये थे। बेबीलोनिया के जिंगुरत ही मुसलमानों की मस्जिदों, मध्यकालीन मीनारों और अमेरिका की वास्तु-कला के कुछ रूपों के लिये आदर्श बने।

हित्ती लोगों की शासन-व्यवस्था सुदृढ़ थी। भवन-निर्माण की इनकी कला यथार्थवादी थी और विशालता को महत्व देती थी। विश्व के इतिहास में इनका जो विशिष्ट स्थान है, वह इस कारण से है कि इन्होंने ही सबसे पहले लोहे का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल शुरू किया और लोहे के औजारों का निर्माण किया।

असीरिया की संस्कृति शान्ति के क्षेत्र में अपने कृत्यों के कारण ही नहीं प्रसिद्ध है। असीरियन लोग सैनिक-कला में विशेष कुशल थे। इन की श्रेष्ठता घेरा डालने और लोहे के पैने अस्त्र-शस्त्रों तथा रक्षा के कवच और ढालों के कारण थी। इनके कुछ दूसरे उल्लेखनीय कार्य हैं गवर्नरों के द्वारा प्रान्तों का शासन,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

घोड़ों का बड़े पैमाने पर उपयोग, जिससे आने-जाने और सामान ढोने में सुविधा हुई और सार्वजनिक हित

एक प्राचीन असीरियन सैनिक

के लिये डाक-व्यवस्था का चलन हुआ। इन्होंने सभी वनस्पति पदार्थों की एक लम्बी सूची बनाई। इसी प्रकार पदार्थों का वर्गीकरण प्राकृतिक विज्ञानों की उन्नति में सहायक हुआ। सम्राट् अशुरबनिपाल द्वारा स्थापित पुस्तकालय प्राचीन विश्व का सबसे प्रसिद्ध पुस्तकालय था, जिसमें बीस हजार फलक थे।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

फ़ोनेशियन लोग प्राचीन काल के प्रसिद्ध व्यापारी थे। इन का भूमध्यसागर के व्यापार पर एकाधिकार-

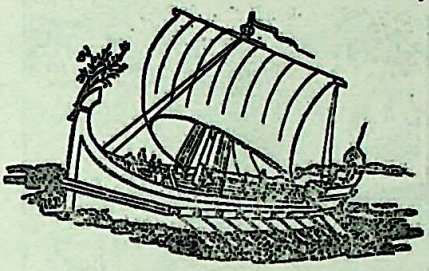

फोनेशियन जहाज

सा था। ये स्पेन, इंगलैण्ड और पश्चिमी अफ्रीका तक की यात्रा किया करते थे। व्यापारियों के कुछ अवगुण इनमें भी थे जैसे झूठ बोलना, जहाजों को लूटकर स्त्रियों को दास के रूप में बेचना और व्यापार के मार्गों और दूसरी जानकारियों को गुप्त रखना। संस्कृति के क्षेत्र में इन्होंने किसी मौलिक तत्व को जन्म नहीं दिया; किन्तु बेबीलोन और मिस्र की संस्कृतियों का सम्मिश्रण करके उस धरोहर को इन्होंने संसार के अन्य देशों को दिया। इन्होंने बाइस व्यंजनों वाली एक वर्णमाला को जन्म दिया। पश्चिमी देशों की कला में प्रयुक्त होनेवाले कुछ कला के चिह्न, जैसे—कमल का फूल, स्फिन्क्स और कई प्रकार के परदार राक्षस फोनेशियन कलाकारों की ही कृतियाँ थीं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हिब्रू लोगों ने संस्कृति के बाह्य तत्वों के क्षेत्र में कोई भी उल्लेखनीय प्रगति नहीं की। उनकी वास्तविक

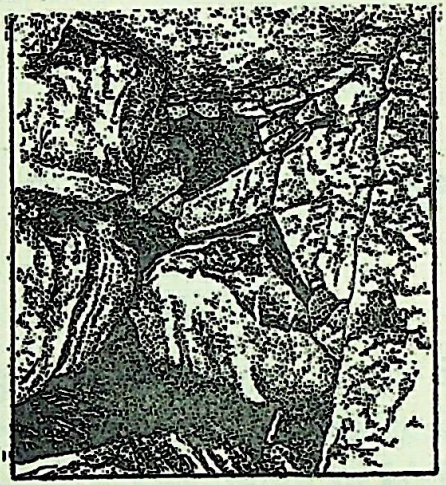

मूसा का कूआ

देन संस्कृति को प्रेरणा देनेवाले आदर्शों के कारण थी। उन का आध्यात्मिक विचार और ईश्वर के संबंध में उनकी भावना उच्चकोटि की थी। पाश्चात्य संसार की धार्मिक विचारधारा हिब्रू संस्कृति की ऋणी है। योरप की अनेक धार्मिक परम्परायें और कथायें हिब्रू उत्पत्ति की देन हैं। योरप की अनेक भाषाओं के साहित्य को समझने के लिये 'ओल्ड टेस्टमेण्ट' की पृष्ठभूमि आवश्यक है। हिब्रू संस्कृति की सर्वोच्च देन ईसाई धर्म के रूप में विश्व-संस्कृति की प्रमुख देनों में से है। योरप की संस्कृति में सामाजिक समता और न्याय की भावना हिब्रू संस्कृति के द्वारा ही आई है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मूसा के द्वारा दी गई दस शिक्षायें मनुष्य की नैतिक चेतना के स्वरूप निर्धारण में सहायक हुई हैं और आज भी मानव-मन के ऊपर उनका प्रभाव दिखलाई पड़ता है। हिब्रू लोगों का विश्वास था कि हर एक आदमी में एक पवित्र बहुमूल्य वस्तु है, जिसका विनाश कोई नहीं कर सकता। यह विश्वास व्यक्तिगत स्वतंत्रता की भावना के विकास में सहायक हुआ,। हिब्रू धर्म के दैवी विधान और न्याय तथा एक ईश्वर के आदेश के पालन के विचार ने ईसाई धर्म और इस्लाम दोनों का ही मार्ग प्रशस्त किया।

ईरान का प्राचीन साम्राज्य नील नदी से सिन्धु नदी तक फैला हुआ था। इसकी शासन-व्यवस्था असीरियों से ली गई थी; किन्तु ईरानियों ने इस व्यवस्था का समुचित विकास किया। इसका अनुकरण रोम और भारत ने भी किया। लीडियन लोगों ने सिक्कों के प्रयोग का चलन शुरू किया। जरथुस्त्र नाम के प्रसिद्ध धर्मोपदेशक का चलाया हुआ धर्म ईरान राज्य का धर्म था। उन्होंने सत् विचार, सत् शब्द और सत् कार्यों पर ज़ोर दिया, जिसकी श्रेष्ठता आज भी संसार के नास्तिक और बुद्धिवादी भी मानते हैं। उन्होंने नैतिक आदर्शों को महत्व दिया। उन्होंने प्रकाश के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

देवता में विश्वास को मुक्ति का मार्ग बतलाया। ईरानी सम्राट् धार्मिक सहिष्णुता और सद्भाव के

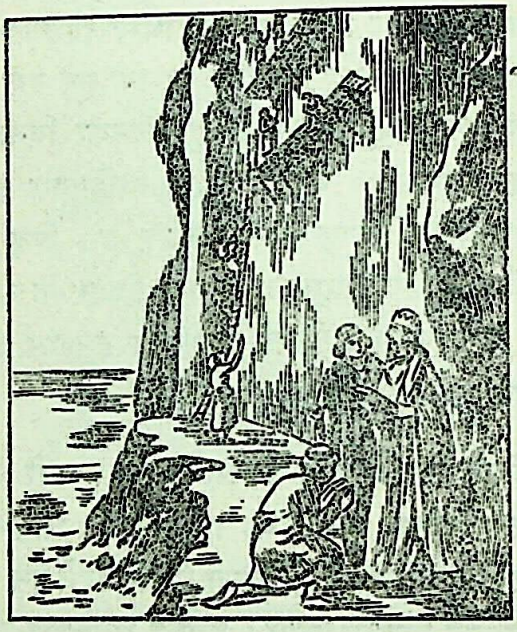

दारा महान् पत्थर की चट्टान पर अपना आदेश खुदवाते हुए।

लिये प्रसिद्ध हैं। प्रसिद्ध सम्राट् द्वारा महान् ने अपने साम्राज्य को फैला कर सुदूर स्थित अनेक संस्कृतियों को एक-दूसरे से मिलने और उन से कुछ सीखने का अवसर दिया।

अरब संस्कृति की उत्कृष्ट देन इस्लाम धर्म के रूप में है। इस्लाम एक अल्लाह में और उसके पैगम्बर के रूप में मुहम्मद में विश्वास रखता है। इसकी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विशेषता इसके अनुयायियों में एक बिरादरी की भावना है। खलीफ़ा के प्रभाव में इस्लाम का प्रचार पूर्व में सिन्धु और पश्चिम में पेरेनीज़ तक हुआ था। इस्लाम से ही योरप को नाविक जीवन के नियम और कानून तथा भोजन-पान, उद्योग और व्यापार की कई वस्तुयें और कई शब्द भी प्राप्त हुए हैं। इस्लाम की विश्व-संस्कृति को प्रमुख देन भारत और यूनान की खोजों को बनाये रखना है। इस्लाम ने इनमें अपना भी कुछ योग-दान दिया और इनको विश्व की सभ्यता और ज्ञान का अंग बना दिया। यूनान ने जो वैज्ञानिक प्रगति की परम्परा शुरू की थी वह आधुनिक संसार को यूनान के द्वारा नहीं, बल्कि इस्लाम के द्वारा प्राप्त हुई है। अरबके लोगोंने अनुवादों के द्वारा अनेक ऐसे यूनानी ग्रन्थों की रक्षा की, जिनका मूल रूप आज नष्ट हो चुका है। विज्ञान के क्षेत्र में उन्हें गणित, खगोल-विद्या, चिकित्सा, रसायन और भूगोल में अधिक रुचि थी। इसके लिये उन्होंने उस युग के अन्य देशों के प्रमुख ग्रन्थों के अनुवाद का भी प्रबन्ध किया। भारत से उसके अंक, शून्य का उपयोग और दशमलव की पद्धति तथा चीन से काग़ज और छपाई की खोज को लेकर योरप के मार्ग से पूरे संसार में फैलाने का श्रेय भी इस्लाम को ही है। जब कि योरप के राज्य बर्बर युद्धों में फँसे हुए थे, उस समय

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस्लाम ने ही उच्च बौद्धिक जीवन के आदर्शों और परम्पराओं को जीवित रखा। योरप में जो पुनरुज्जीवन (Renaissance) के काल में ज्ञान और आविष्कार की परम्परा चली, जिसने कि आधुनिक संसार की संस्कृति को उस का विशिष्ट रूप दिया, उसके मूल में प्रेरणा और स्फूर्ति के रूप में इस्लाम के द्वारा सुरक्षित वैज्ञानिक और मानवीय परम्परा ही थी। इस प्रकार विश्व-संस्कृति के इतिहास की दृष्टि से इस्लाम का महत्व बड़ा ऊँचा है। यह प्राचीन संस्कृतियों और आधुनिक सभ्यताओं को जोड़नेवाली एक मज़बूत कड़ी रही है।

तुर्क जो कि मध्य-एशिया के रहनेवाले थे, लड़ाकू लोग थे। उन्होंने इस्लाम को स्वीकार किया और अरबों के स्थान पर अपना साम्राज्य फ़ारस की खाड़ी से बेलग्रेड तक स्थापित किया। विश्व की संस्कृति को इनकी कोई महत्वपूर्ण मौलिक देन नहीं है; लेकिन विश्व की संस्कृति को एक महत्वपूर्ण दिशा की ओर ले जानेवाली एक घटना से ये संबंधित हैं। इनके द्वारा १४५३ ई० में कुस्तुन्तुनिया की विजय कई अर्थों में योरप के इतिहास में मध्य-युग के स्थान पर आधुनिक युग को प्रारंभ करनेवाली थी। कुस्तुन्तुनिया के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विद्वान् योरप के नगरों में फैल गये और इस प्रकार मानववाद और विचार-स्वतंत्रता के क्रान्तिकारी भाव यूनानी संस्कृति से पूरे योरप की संस्कृति के स्थायी अंग बन गये। तुर्कों के द्वारा स्थल-मार्ग पर अधिकार हो जाने के कारण योरप के देशों ने पूर्व के लिये जो सामुद्रिक यात्रायें कीं, उनका तो विश्व के इतिहास पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। धीरे-धीरे जो योरप की संस्कृति पूरे विश्व को प्रभावित करने लगी और संसार में विश्व-व्यापी दृष्टिकोण आया, वह सब इसी घटना का परोक्ष प्रभाव था।

इन प्रदेशों की संस्कृतियों का आगे के काल में कोई नया विकास या कोई नई प्रगति नहीं हुई। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आने पर इन्होंने पाश्चात्य देशों से संस्कृति की कई बातें ग्रहण कीं, जिनमें वैज्ञानिक परम्परा का मुख्य स्थान है। टर्की को तो मुस्तफ़ा कमाल अतातुर्क ने मध्य-युग के प्रभावों से निकाल कर पूर्ण रूप से आधुनिक और पाश्चात्य प्रभावों के अनुसार बदलने का सराहनीय रूप से सफल प्रयत्न किया। अरब राज्यों ने भी नये प्रभावों में आकर राष्ट्रीयता के विचारों के अनुसार अपना महत्व बढ़ाया। इज़राइल में शताब्दियों बाद यहूदियों का एक पृथक् राज्य स्थापित हुआ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

संस्कृति का दूसरा प्रमुख केन्द्र योरप है। योरप में जन्म लेनेवाली सर्वप्रथम संस्कृति 'एजिया' की है। इस संस्कृति में कई तत्व ऐसे हैं जो योरप की आधुनिक संस्कृति से बहुत कुछ मिलते-जुलते हैं। एजिया के लोगों में भी जीवन के सुखों को उपभोग करने की भावना दिखलायी पड़ती है। उनके वस्त्रों और मनोरंजन के साधनों का आधुनिक वस्तुओं से साम्य है। एजिया की संस्कृति में व्यक्तिगत स्वाधीनता की भावना बीज रूप में उपस्थित थी। योरप की संस्कृति में एजियन संस्कृति के कई तत्व यूनान के माध्यम से आये। यूनान ने एजिया के लोगों से कई बातें सीखीं, जिनका प्रभाव आगे चल कर योरप की सभ्यता पर पड़ा। संगीत, नृत्य और खेल-कूद में यूनानियों का प्रेम एजियन प्रभाव के कारण था। यूनानियों के प्रमुख उत्सव-केन्द्र ओलम्पिया आदि एजियन सभ्यता के समय ही स्थापित हो गये थे। यूनान के धर्म पर भी, विशेषकर कई प्रसिद्ध देवी-देवताओं की कल्पना पर, एजियन प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। यूनानियों ने तौल और नाप के पैमाने और जहाज़रानी की कला इन्हीं से सीखी थी। एजियन लोगों की समृद्धि भूमध्यसागरी व्यापार पर ही आधारित थी। इनका पश्चिमी एशिया

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

और योरप दोनों से ही संबंध था। इन्होंने रेखा-प्रधान लिपि का आविष्कार किया, जिससे लिखने में गति आयी। ताँबे और काँसे की चीजों को बनाने की कला में इन्होंने प्रगति की थी।

वर्तमान विश्व की संस्कृति में जिन निर्माणकारी तत्वोंने भाग लिया है, उनमें यूनानी संस्कृतिका महत्व निःसन्देह बहुत ऊँचा है। एक विद्वान् का कथन है कि मशीनों को छोड़ कर हमारी संस्कृति का शायद ही कोई सांसारिक जीवन से संबंधित तत्व है, जिसकी उत्पत्ति यूनान में न हुई हो। अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि

पेरीक्लीज

शेली का कथन है, "हम सभी यूनानी हैं। हमारे कानून, हमारा साहित्य, हमारा धर्म, हमारी कलायें, इन सब का मूल यूनान में है।" पेरीक्लीज का युग यूनान

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्राचीन यूनान

लोगों का दैनिक जीवन तथा उनके मनोरंजन के साधन

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के इतिहास का स्वर्ण-युग था, जबकि पार्थेनन का निर्माण हुआ।

स्वतंत्रता की भावना यूनानियों की प्रमुख विशेषता थी। इस भावना को वे सर्वोच्च महत्व देते थे और इसके लिये हर प्रकार के बलिदान करने को भी तैयार रहते थे। उन का साहित्य स्वाधीनता की भावना के उत्कृष्ट भावों से भरा हुआ है। देश की स्वतंत्रता के साथ ही उन्होंने व्यक्ति की स्वतंत्रता के विचार का तथा स्वतंत्र शासन-संस्थाओं का भी विकास किया। लोक-सभा और समितियों द्वारा शासन की प्रणाली यूनान में अति प्राचीन है। इन्हीं संस्थाओं से बाद के युग की प्रजातन्त्रात्मक शासन-पद्धति का विकास हुआ। यूनानी संस्कृति में राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-ही-साथ मानसिक स्वतंत्रता और निर्भीकता के भी उच्चकोटि के भाव मिलते हैं। यूनानियों का मस्तिष्क धर्म, परम्परा अथवा रूढ़ियों का दास नहीं था। सत्य की खोज करने की इच्छा, जो विज्ञान को जन्म देती है, यूनानियों की विशेषता थी। उन में प्रकृति के रहस्यों को जानने की लालसा और कभी न बुझने वाली ज्ञान की प्यास थी। सत्य की खोज में वे मानव-तर्क को ही सबसे उच्च स्थान देते थे, जिसके फलस्वरूप

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उनका विज्ञान और दर्शन जीवन की ओर देखता है और धर्म के प्रभाव से युक्त है। सौन्दर्य का प्रेम यूनान के किसी एक वर्ग विशेष की नहीं अपितु पूरे यूनानी समाज की विशेषता थी। सौन्दर्य-प्रेम की यह भावना ही यूनानी नाटक, कविता, संगीत और ललित-कलाओं के विकास में दिखलाई पड़ती है।

यूनानी संस्कृति में मानववाद भी विकसित रूप में देखने को मिलता है। यूनानियों के अनुसार मानव ही सब चीजों का मापदण्ड है। भावी जीवन की चिन्ता उनके मस्तिष्क को परेशान नहीं करती थी। वे इस जीवन के सुखों में अत्यधिक रुचि लेते थे और उनका पूर्ण उपभोग करने का प्रयत्न करते थे। लेकिन सुख की लालसा उन्हें नीचे नहीं गिरा पायी। उनके जीवन में सन्तुलन और आत्म-नियन्त्रण भी था। बुद्धिवाद के प्रभाव के कारण उनकी अभिरुचि सुसंस्कृत थी। उन का दृष्टिकोण नितान्त भौतिकवादी नहीं था। धन-संचय के प्रयत्न को वे महत्व देते थे। किन्तु धन उनके लिये साधन था, लक्ष्य नहीं। मानव-व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास ही उनके लिये प्रमुख महत्व का था।

योरप की संस्कृति के स्वरूप के निर्माण में यूनान की संस्कृति का बहुत अधिक महत्व है। योरप की

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

संस्कृति के सभी क्षेत्रों में हम इस प्रभाव को देख सकते हैं। योरप के इतिहास में जो पुनरुज्जीवन (Renaissance) के युग के साथ आधुनिक काल का प्रारंभ होता है, वह वास्तव में यूनानी संस्कृति के तत्वों के साथ योरप के नये परिचय के कारण ही हुआ था।

यूनान की भाषा और साहित्य ने योरप के सभी देशों की भाषाओं और साहित्यों को प्रभावित किया है। अधिकांश योरपीय भाषाओं की उत्पत्ति यूनानी भाषा से ही हुई है और यूनानी भाषा के शब्द योरप की सभी भाषाओं में मिलते हैं। यूनानियों ने साहित्य के विभिन्न रूपों को जन्म दिया। यूनानी ग्रन्थों का प्रभाव योरप के साहित्य पर उनके रूप, उनकी शैली, उनकी कथा-वस्तु और उनके आदर्श सभी पर स्पष्ट दिखलाई पड़ता है। ग्रीक भाषा की कुछ प्रमुख रचनाओं में हम होमर के ईलियड और ओडेसी तथा एसकाइलक्स और सोफ़ोक्लीज के दुःखान्त नाटकों का उल्लेख कर सकते हैं।

योरप के माध्यम से पूरे संसार की दार्शनिक विचारधारा पर यूनानी दर्शन का गहरा प्रभाव है। दार्शनिक प्रश्नों को सुलझाने और समझने में यूनान

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के दार्शनिक तर्क का सहारा लेते थे। उन्होंने दर्शन के कई प्रमुख प्रश्नों पर विचार किया, जैसे—ईश्वर, संसार, काल, कारण, परिवर्तन और सत्य का स्वरूप। यूनानियों ने ही दर्शन की कई शाखाओं जैसे मेटाफ़िज़िक्स (आत्मदर्शन), एथिक्स (आचार-शास्त्र), लॉजिक (तर्कशास्त्र) और एपिस्टेमालोजी (प्रामाण्यशास्त्र) और दर्शन के कई प्रमुख सिद्धान्तों और सम्प्रदायों, को जैसे—आइडियलिज्म (आदर्शवाद), मेटीरियलिज्म (भौतिकवाद), एग्नास्टिसिज्म (अज्ञानवाद), इम्पीरिसिज्म, स्केप्टिसिज्म और नेचुरलिज्म (प्रकृतिवाद) को जन्म दिया,। यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिकों में सुकरात, प्लेटो और अरस्तू का नाम सदैव बना रहेगा।

आधुनिक विज्ञान की परम्परा की भी उत्पत्ति यूनानी है। विज्ञान का फिजिक्स (भौतिक-विज्ञान) केमेस्ट्री (रसायन-विज्ञान), बाटनी (वनस्पति-विज्ञान), फिजियॉलोजी (शारीरिक विज्ञान), अनाटोमी (शरीर-रचना-विज्ञान), चिकित्सा-विज्ञान, खगोल-विज्ञान आदि शाखाओं में विभाजन और नामकरण यूनानियों ने ही किया था। चिकित्सा-शास्त्र में 'हिपोक्रेटीज' और गणित में 'पाइथागोरस' का नाम चिरस्थायी है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

संस्कृति और संस्कृतियाँ—

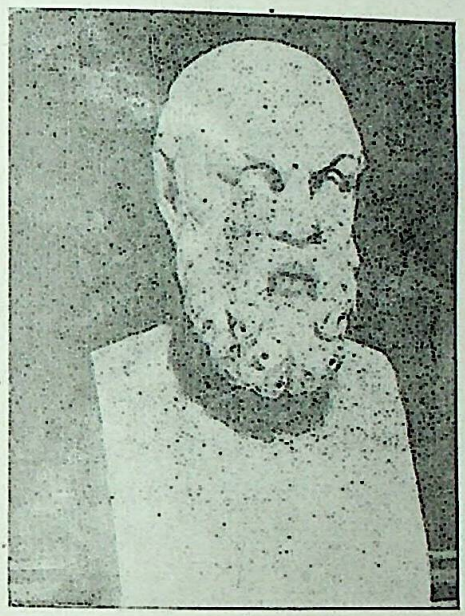

सुकरात

★

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

राजनीति-शास्त्र के क्षेत्र में यूनान की देन बहुत अधिक महत्वपूर्ण और विश्व-संस्कृति पर गहरे प्रभाव-वाली है। सबसे पहले यूनानियों ने ही राजनीति-शास्त्र को एक पृथक् विषय के रूप में स्थापित किया। राज्य और समाज की सभी बातों को वैधानिकता के आदर्श के अनुसार देखने की परम्परा भी यूनानियों ने ही चलाई। यूनान में हमें शासन के क्षेत्र में अनेक प्रणालियों और पद्धतियों के दर्शन होते हैं। यूनानियों ने शासन-सम्बन्धी सभी बातों पर वैज्ञानिक ढँग से विचार किया। वर्तमान प्रजातन्त्र की परम्परा का मूल भी यूनानी ही है। यूनानियों ने न्याय, समता, स्वतन्त्रता और प्राकृतिक अधिकारों के विचारों को समुचित महत्व दिया।

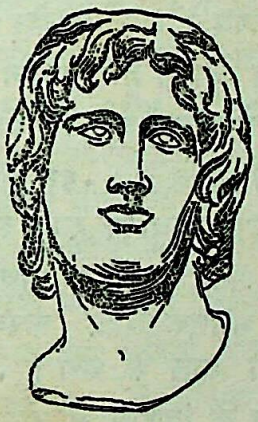

सिकन्दर

यूनानी संस्कृति का ही एक परिष्कृत और परि-वर्तित रूप हमें हेलेनिस्टिक-युग में दिखलाई पड़ता है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस का समय सिकन्दर की विजयों के बाद से १४६ ईसा पूर्व तक रखा जाता है। इस युग का केवल यूनानी संस्कृति के इतिहास की दृष्टि से ही महत्व नहीं है, विश्व की संस्कृति पर भी इसका गहरा प्रभाव है। यूनानी संस्कृति के जिस रूप ने योरप और उसके द्वारा संसार को प्रभावित किया, उसके कई प्रमुख तत्व हेलेनिस्टिक उत्पत्ति के हैं। इस युग में यूनान की संस्कृति अपनी भौगोलिक सीमाओं को पार करके, मिस्र, मेसोपोटेमिया और पूर्व के देशों में फैली। दूसरी ओर पूर्व की संस्कृतियों से प्रभावित हो कर यूनानी संस्कृति ने एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाया। यूनानी संस्कृति में विश्व-राज्य और मानव-प्रेम के विचारों का इस समय समुचित विकास हुआ। इन भावनाओं का रोमन-सभ्यता और ईसाई-धर्म के विकास के लिए पृष्ठभूमि के रूप में महत्व है। इस संस्कृति के बाह्य तत्वों में बहुत-सी बातें आधुनिक काल से साम्य रखती हैं। ज्यामिति का जनक 'यूक्लिड' तथा गणित और भौतिक शास्त्र में मौलिक खोज करनेवाला विद्वान् 'आर्किमिडीज़' इसी काल के रत्न हैं।

विश्व संस्कृति के विकास में रोमन-संस्कृति का महत्व अन्य प्रमुख संस्कृतियों की भाँति ही बहुत अधिक ऊंचा है। रोमन-साम्राज्य ने अपने समय से पहले की

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

संस्कृतियों विशेष रूप से यूनानी संस्कृति को सुरक्षित रखा जिससे वह आगे चलकर विश्व की दूसरी संस्कृतियों को उपलब्ध हो सकीं। इसके लिए रोमन-साम्राज्य की सुसंगठित शासन-व्यवस्था और उसके द्वारा संभव हुई शान्ति को ही मुख्य रूप से श्रेय मिलना चाहिए। आज की शासन-पद्धति की अनेक परम्पराएँ रोमन साम्राज्य के समय में ही विकसित हुईं। नगरों को अपने शासन में स्वतन्त्रता का चलन और कार्यकारिणी और धारा-सभा को अलग रखने का विचार इसी समय शुरू हुए। रोमन-साम्राज्य के दूर के हिस्सों में भी अच्छी सड़कों का जाल-सा बिछा हुआ था। रोम की सबसे अधिक प्रसिद्ध देन कानून के क्षेत्र में है। आज भी कानून के विद्यार्थी का ज्ञान रोमन कानून को न जानने पर अधूरा ही समझा जाता है। रोमन लोग अपनी व्यावहारिक बुद्धि के कारण प्रसिद्ध हैं। उन्होंने विज्ञान की खोजों का प्रयोग जीवन के सुखों को बढ़ाने के लिए किया। उन्होंने यूनान की कला को ग्रहण तो किया; किन्तु अपनी व्यावहारिक प्रतिभा से उसको यथार्थता प्रदान की। उनकी कलात्मक कृतियाँ अपनी विशालता के के कारण यूनानी कला से अधिक प्रभावशाली हैं। रोमन लोगों ने ही संसार को विशाल सार्वजनिक भवनों के निर्माण की परम्परा सिखाई है। आज भी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्राचीन रोम

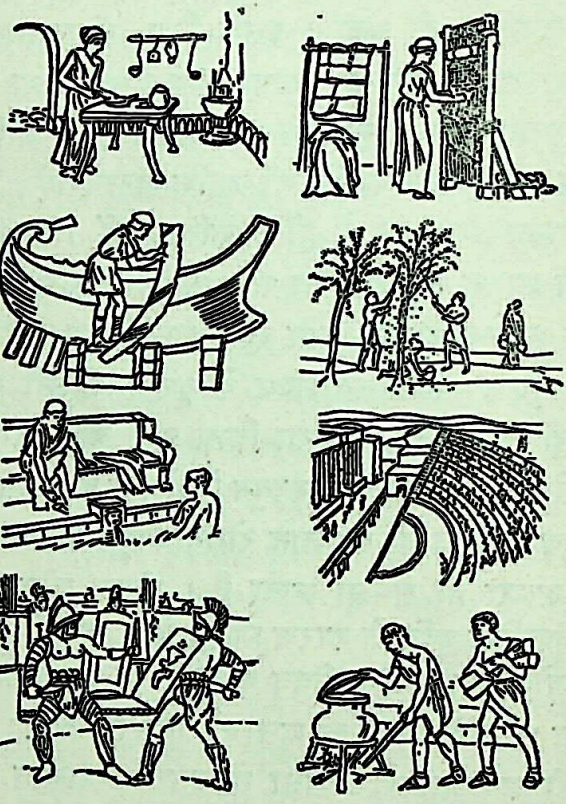

दैनिक जीवन तथा मनोरंजन

के साधन

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

संसार के सभी प्रसिद्ध नगरों में सार्वजनिक भवन रोमन आदर्शों से प्रभावित रहते हैं। रोमन लोगों के द्वारा साम्राज्य के विभिन्न भागों में बनाये गये विशाल नगर, मन्दिर, प्रेक्षागार, स्नानागार, और फोरम आज भी अपने अवशेषों के द्वारा संसार को आकर्षित करते हैं।

रोमन संस्कृति अपने प्रभावों के कारण आधुनिक विश्व की संस्कृति के बहुत निकट है। वर्तमान सभ्यता को योरप के माध्यम से जो संस्कृति की धरोहर मिली है, उसकी उत्पत्ति यद्यपि यूनानी थी फिर भी, वह जिस रूप में योरप को प्राप्त हुई वह मुख्य रूप से रोमन ही थी। रोमन लोगों ने अपनी लैटिन भाषा के रूप में संसार को एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा दी। इस रूप में इसका इतने अधिक समय तक उपयोग हुआ है कि इसने न केवल सांस्कृतिक एकता बढ़ाई है बल्कि इसने योरप और अमेरिका की भाषाओं को अत्यधिक प्रभावित किया है। इन भाषाओं के साहित्य की शैली, रूप, विषय, विचार, पद्धति और शिक्षा पर भी लैटिन साहित्य का गहरा प्रभाव है। लैटिन साहित्यकार वर्जिल और सिसरो का जितना प्रभाव योरपीय भाषाओं के साहित्य पर है, उतना यूनानी भाषा के किसी साहित्यकार का नहीं है।

रोमन संस्कृति ने ईसाई धर्म पर भी प्रभाव डाला है। ईसाई धर्म ने रोम के अनेक देवी-देवताओं की

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पूजा, देवालयों की व्यवस्था और लैटिन भाषा को अपनाया और रोमन-प्रभाव में ही पर्व और उत्सवों को महत्व दिया और अपनी धार्मिक संस्था का संगठन किया ।

आगे चल कर रोमन-साम्राज्य पूर्व और पश्चिमी दो भागों में विभाजित हो गया । पश्चिमी साम्राज्य के पतन के बाद भी पूर्वी रोमन-साम्राज्य बना रहा । यह बाइज़ेन्टाइन संस्कृति के नाम से प्रसिद्ध है । इस संस्कृति की अपनी उल्लेखनीय मौलिक देन के अभाव में भी इसका विश्व के इतिहास की दृष्टि से बहुत अधिक महत्व है । इसने यूनानी संस्कृति और रोमन शासन-व्यवस्था का बहुत अच्छा समन्वय उपस्थित किया । इसकी शासन-व्यवस्था सुदृढ़ और कुशल थी, जिसके कारण एक हज़ार वर्षों तक इसका अस्तित्व बना रहा । प्रसिद्ध सम्राट् जस्टिनियन ने रोमन कानून की संहिता बना कर बहुत ही महत्वपूर्ण काम किया । इस साम्राज्य ने एक हज़ार वर्षों तक इस्लाम और ईरान के आक्रमणों से योरप की रक्षा करके उसकी संस्कृति को बचाया । पाँचवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक बाइज़ेन्टियन साम्राज्य ही ईसाई जगत् की संस्कृति का प्रमुख केन्द्र था । इसकी संस्कृति का प्रसार रूस और बाल्कन प्रायद्वीप में हुआ और अरब लोगों ने भी इनसे कुछ बातें सीखीं । इस प्रकार बाइज़ेण्टाइन संस्कृति का

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रमुख महत्व संस्कृति के प्रसार और संरक्षण के कारण है। इसने प्राचीन यूनानी साहित्य, दर्शन और विज्ञान के ग्रन्थों की रक्षा की और पुनरुज्जीवन (Renaissance) के समय योरप ने इस धरोहर को बाइज़ेण्टिया से पाकर ही अपनी संस्कृति का नया अध्याय शुरू किया। बाइज़ेण्टियन कला अपनी भव्यता के कारण आज भी प्रसिद्ध है।

लोगों में प्रायः एक गलत धारणा पाई जाती है। वे मध्य-युग को योरप की संस्कृति में अज्ञानता, बर्बरता और अन्धकार का युग मानते हैं। किन्तु ऐसा दृष्टि-कोण सही नहीं है। मध्य-युग ने भी योरप की संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मध्य-युग धर्मप्रधान युग था। इसकी देन धर्म के क्षेत्र में ही सबसे अधिक श्रेष्ठ और उल्लेखनीय है। ईसाई-धर्म का योरप के जीवन पर सबसे अधिक प्रभाव इसी युग में पड़ा। स्वयं-ईसाई धर्म को अपना रूप बहुत कुछ अर्थों में इसी समय मिला। कई भिक्षु-सम्प्रदायों की स्थापना हुई और अनेक मठों का निर्माण हुआ। घूम-घूम कर उपदेश देनेवालों के सम्प्रदाय भी बढ़े। इसी समय ईसाई राज्यों ने अपनी पवित्र भूमि को प्राप्त करने के लिए दीर्घकालीन धर्मयुद्ध किया, जो क्रूसेड्स के नाम से प्रसिद्ध है। योरप के धार्मिक और नैतिक जीवन में जो आचार की परम्पराएँ हैं, उनका भी इस युग में विकास हुआ। योरप में एक भद्र पुरुष की जो कल्पना है, उसके मूल में मध्ययुग के सामन्त के शिष्टा-

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चार का आदर्श है । मध्य-युग के ईसाई-दर्शन ने योरप की संस्कृति को मृदुता और स्नेह की भी शिक्षा दी ।

क्रूसेड्स के उद्घोषक

बौद्धिक क्षेत्र म मध्य-युग की देन वास्तव में श्रेष्ठ है । बोलोग्ना, पेरिस और ऑक्सफर्ड के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों की स्थापना इसी समय में हुई थी । योरप की प्रादेशिक भाषाओं का विकास भी मध्य-युग में ही हुआ । विज्ञान और दर्शन के क्षेत्रों में भी मध्य-युग पिछड़ा नहीं था । इक्विनास, दाँते, बेकन और एडेलार्ड जैसे विचारक किसी भी युग के लिये गौरव के कारण हो सकते हैं । अरब के माध्यम से पूर्व के कई वैज्ञानिक आविष्कार योरप में आये, जिनके कारण क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए । भारत की संख्य-पद्धति और दशमलव का सिद्धान्त, तथा बारूद, चश्मा, कुतुबनुमा की डिबिया,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मुद्रण-यन्त्र और पेण्डुलम की घड़ी इसी समय योरप में आये। योरप के संगीत की उत्पत्ति मध्यकाल में ही हुई। चित्रकला में हम गिपटो नाम के प्रसिद्ध चित्रकार का नाम ले सकते हैं। गौथिक शैली के गिर्जाघरों का प्रभाव आधुनिक भवनों पर भी देखने को मिलता है।

कई अर्थों में मध्य-युग के योरप की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक दशाओं ने बाद के युग की संस्थाओं के विकास का मार्ग प्रशस्त किया।

योरपीय संस्कृति के इतिहास का आधुनिक युग पुनरुज्जीवन (Renaissance) के युग से शुरू होता है। यूनानी ज्ञान के पुनर्जन्म ने कला और विज्ञान के क्षेत्र में एक नई परम्परा शुरू की। ज्ञान के ऊपर जो धर्म का बोझ लदा हुआ था, उसके हट जाने से अन्धविश्वास का अन्त हो चला। लोगों में मानव और उसके जीवन में एक नई रुचि पैदा हुई, जिससे कला और साहित्य में नये-नये प्रयोग हुये। मनुष्य अपने दैनिक जीवन को सुखी बनाने के लिये नये-नये उपाय ढूँढ़ने लगा। इसी प्रकार ज्ञान के क्षेत्र में सत्य को खोजने की लालसा धर्म के बंधनों से मुक्त हो गई। छपाई की सुविधा बढ़ जाने से पुस्तकों का प्रसार अब अधिक हो सकता था। साहित्य में दाँते, पेट्रार्क, चासर और एरैसमस उल्लेखनीय नाम हैं। कला के क्षेत्र में हम रेम्ब्राण्ट, माइकेल एंजेलो और रैफेल के नाम गिना सकते हैं। इसी समय में भौगोलिक खोजों के फलस्वरूप लोगों ने अमेरिका

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

को खोज निकाला और अफ्रीका होते हुए भारत पहुँचने में सफल हुये। इन खोजों से लोगों का दृष्टिकोण व्यापक बना। इन का प्रभाव योरप के राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन की भावी गति पर बहुत अधिक पड़ा।

धार्मिक क्रान्ति ने, जोकि धर्म-सुधार (Reformation) के नाम से प्रसिद्ध है, योरप में 'रोमन चर्च के एकाधिकार को भंग कर दिया। प्रारंभ में यद्यपि इस कारण कुछ युद्ध हुये, लेकिन आगे चलकर राजनीतिक जीवन पर से धर्म का प्रभुत्व क्षीण होने लगा और लोगों में धर्म के प्रति एक उदासीनता का भाव आने लगा।

सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दियाँ बौद्धिक क्रान्ति का युग मानी जाती हैं। इस समय मनुष्य को अपनी बुद्धि में आत्मविश्वास बढ़ा। वह सभी विचारों और संस्थाओं को अपनी तर्क की कसौटी पर कस कर स्वीकार करता था। इस प्रकार अनेक प्रचलित विश्वास समाप्त हो गये। इस युग के प्रमुख दार्शनिकों में डेकार्ट, लाक, काण्ट और रूसो का नाम उल्लेखनीय है।

आधुनिक युग में विज्ञान की प्रगति की गति बहुत तीव्र है। विश्व की संस्कृति को योरप की संस्कृति की प्रमुख देनों में से हम वैज्ञानिक खोजों को ऊँचा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्थान देते हैं। इस का प्रभाव पूरे संसार पर पड़ा है। लोगों के बाह्य जीवन पर ही इस का प्रभाव नहीं है, उन का दृष्टिकोण भी क्रान्तिकारी रूप में परिवर्तित हो गया है। इन सभी खोजों का संक्षिप्त उल्लेख करना भी यहाँ संभव नहीं है। फिर भी कुछ प्रमुख खोजों के द्वारा हम योरपीय संस्कृति की इस देन का कुछ आभास करायेंगे। विलियम हार्वे ने रक्त-संचार के सिद्धान्त का पता लगाया। गेलीलियो ने दूरबीन का निर्माण किया और गति के नियम को ढूँढ़ निकाला। न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त का विज्ञान की प्रगति में ऊँचा स्थान है। जेम्स वाट ने वाष्प से चलनेवाले इंजन बनाये। फैराडे ने रसायन के क्षेत्र में तो खोज की ही है, उसने विद्युत्-चुम्बकत्व का भी पता लगाया। डार्विन के स्वतःविकास के सिद्धान्त का प्रभाव समाज और ज्ञान के प्रायः सभी अंगों पर पड़ा। बेसेमेर ने पहली बार स्टील को बनाया। आइन्स्टाइन का सापेक्षिता का सिद्धान्त आधुनिक काल के सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्तों में से है। परमाणु-शक्ति की खोजों ने तो विश्व-संस्कृति पर गहरा प्रभाव पैदा किया है। इधर मनुष्य ने अन्तरिक्ष की खोज और यात्रा में भी प्रगति की है।

इन वैज्ञानिक खोजों ने पूरे मानव-समाज के सुख में बहुत अधिक वृद्धि की है। उस के मार्ग में आने

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वाली प्राकृतिक अड़चनों और उसके जीवन के लिये हानिकारक बातों पर उस का नियन्त्रण बढ़ता जा रहा है। समय और स्थान की दूरी उसके लिये अब कुछ नहीं रही। इन खोजों का यह भी प्रभाव है कि मानव-समाज में एकता के विचार और अन्तर्राष्ट्रीय भाव बढ़े हैं। प्रकृति के रहस्यों को समझने में अपनी प्रगति के साथ-साथ आदमी को अपने पिछले और पिछड़े कुसंस्कारों और अन्धविश्वासों से मुक्ति मिली। धर्म के संकुचित बन्धन अब ढीले होने लगे हैं और विज्ञान की प्रगति के साथ धार्मिक विषयों के प्रति उदासीनता के भाव बढ़ रहे हैं।

१६८८ ई० में रक्तहीन क्रान्ति के फलस्वरूप इंग्लैण्ड में संवैधानिक शासन की परम्परा मज़बूत हुई। लोक-सभा और मंत्रिमण्डल के द्वारा शासन की व्यवस्था के विकास में इंग्लैण्ड का महत्वपूर्ण योगदान है; किन्तु अमेरिका की राज्यक्रान्ति ने आधुनिक काल में पहली बार एक गणराज्य की सफल स्थापना करके मानव के अधिकारों को शासन-व्यवस्था में स्वीकृति दी। फ्रांस की राज्य-क्रान्ति ने स्वतंत्रता और समानता के विचारों को राजनीति के क्षेत्र में क्रियात्मक रूप दिया। इन क्रान्तियों से योरप की उदारवादी और राष्ट्रवादी नीति की परम्पराएँ बलवती हुईं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ये परम्पराएँ अब संसार के सभी देशों पर किसी-न-किसी रूप में प्रभाव डालती हैं।

उत्पादन में मशीनों के प्रयोग से औद्योगिक क्रान्ति का जन्म हुआ। इसने विश्व की संस्कृति और सभ्यता के इतिहास को नई दिशा दी। एक ओर तो इससे समस्त विश्व की आर्थिक व्यवस्था एकता की ओर बढ़ी। दूसरी ओर इससे जनसंख्या नगरों में केन्द्रित होने लगी। इससे जो नई आर्थिक व्यवस्था बनी, वह पूँजीवाद के नाम से प्रसिद्ध है। औद्योगिक क्रान्ति के कारण जो सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याएँ उत्पन्न हुईं, उनको हल करने के लिये नये सिद्धान्त प्रतिपादित हुए, जो आज भी पूरे विश्व पर प्रभाव डाल रहे हैं। श्रमजीवियों की बुरी स्थिति सुधारने के लिये समाजवादी विचारधारा और आन्दोलन शक्तिशाली हुए। इन्हीं का स्वाभाविक विकास मार्क्सवादी विचारधारा में हुआ। यह विचारधारा रूस में अपने विचारों को कार्य रूप देने में सफल हुई। इस प्रकार समाज में समानता का विचार सभी जगह शक्तिशाली होता गया। नई आर्थिक व्यवस्था के फलस्वरूप समाज में एक नये वर्ग 'मध्य वर्ग' का विकास हुआ। इसने शिक्षा और राजनीति में भाग लेने का एकाधिकार उच्च वर्ग के पास नहीं रहने दिया।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप ही योरप के सभी देशों में नये उपनिवेशों पर अधिकार करने के लिए संघर्ष हुआ। साम्राज्यवाद की इस नीति से जो भी हानि हुई है, उसके साथ ही योरप की आधुनिक संस्कृति भी इन देशों में फैली है। इस प्रकार योरप ने सभी बातों का दायरा बढ़ा कर उसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ला दिया है। आधुनिक काल में योरप ने ही सफल प्रकार से अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के विचार और प्रयास को संसार के सभी देशों में फैलाया है।

विश्व की संस्कृति में पूर्व के देशों का महत्व उनके आध्यात्मिक संदेश के कारण है। इस सन्देश के अन्तर्गत शान्ति, मानव-प्रेम और सांसारिक कष्टों के होते हुए सन्तोष के विचार प्रमुख हैं। स्थान की कमी के कारण हमारे लिए यह संभव नहीं है कि हम पूर्व के सभी देशों की संस्कृतियों का वर्णन करें। पूर्व की संस्कृतियों और उन की विचारधारा के निर्माण में हिन्दुस्तान और चीन की संस्कृतियों का प्रभाव सबसे गहरा और अधिक रहा है। इसलिए यहाँ हम मुख्य रूप से इन्हीं दो देशों का दक्षिणी एशिया और पूर्वी एशिया की संस्कृतियों के प्रमुख उदाहरण के रूप में उल्लेख करेंगे।

हिन्दुस्तान की संस्कृति अत्यन्त प्राचीन है। जिस समय संसार के बहुत से भू-भागों में बर्बरता ही फैली

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हुई थी, उस समय भी इस की संस्कृति की विशेषताएँ अपना स्वरूप पा रही थीं। संसार की जीवित संस्कृतियों में केवल चीन ही इसके समान प्राचीन है; और दूसरी प्राचीन संस्कृतियाँ अपने मौलिक रूप में अब नहीं मिलतीं। आधुनिक काल के उत्खनन कार्यों से सिद्ध हो गया है कि हिन्दुस्तान की संस्कृति भी मिस्र, मेसोपोटामिया और दूसरी नदी-घाटियों की संस्कृतियों के समान प्राचीन है। प्राचीन होने के साथ-ही-साथ इस संस्कृति की धारा बिना रुके अभी तक बहती चली आ रही है। दूसरे देशों की संस्कृतियाँ या तो नष्ट हो गई हैं अथवा इतना अधिक बदल गई हैं कि उन का आधुनिक रूप उनके प्राचीन रूप से बिल्कुल नहीं मिलता है। किन्तु भारत की संस्कृति की आत्मा शताब्दियों के बाद भी नहीं बदली है। इस संस्कृति ने समय की गति के साथ नये तत्वों को स्वीकार किया; लेकिन वे उसके अभिन्न अंग बन गये हैं। इस प्रकार हिन्दुस्तान की संस्कृति का वर्तमान काल उसके प्राचीन काल के साथ एक सूत्र में बँधा हुआ है। हिन्दुस्तान के लोगों के जीवन पर उसकी संस्कृति के प्राचीन आदर्श आज भी उसी प्रकार असर डालते हैं जैसा कि वे प्राचीन काल में करते थे।

इस संस्कृति के ऐसे चिरस्थायी जीवन और अक्षुण्ण जीवन-शक्ति को देख कर यह निष्कर्ष सहज ही

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

में निकाला जा सकता है कि इसमें कुछ तत्व ऐसे हैं, जो असाधारण रूप से सजीव और स्वस्थ हैं।

हिन्दुस्तान की संस्कृति की प्रमुख विशेषता उसकी धार्मिक प्रेरणा है। धर्म का इस संस्कृति में सर्वोच्च महत्व है। संस्कृति के अन्य सभी तत्वों और अंगों पर धर्म का प्रभाव देखा जा सकता है। आध्यात्मिक साधना की इस सजीव परम्परा ने ही इस संस्कृति को अन्तर्मुखी और ऊर्ध्वमुखी बना दिया है। जीवन के प्रति इस आध्यात्मिक दृष्टिकोण के कारण हिन्दुस्तानी संसार को अपना चिरन्तन निवास-स्थान नहीं समझता। वह भौतिक पदार्थों को चरम सत्य नहीं मानता। दर्शन के क्षेत्र में भी भारतीय संस्कृति ने उच्चकोटि की प्रगति की है। ये दार्शनिक विचार अपनी मौलिकता और श्रेष्ठता के कारण संसार के दार्शनिकों के लिये आदर्श रूप हैं। आज भौतिकवाद के इस युग में संसार अपने परित्राण के लिये भारत की आध्यात्मिक और दार्शनिक परम्परा की ओर ही आश-भरे नेत्रों से देख रहा है। भारत की योग की साधना और वेदान्त के आध्यात्मिक चिन्तन की परम्परा ने पाश्चात्य देशों को प्रभावित किया है। आत्मिक शान्ति के लिए पाश्चात्य देशों में भी इन का प्रसार हो रहा है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस आध्यात्मिक प्रेरणा का भारत के सामाजिक जीवन पर भी अच्छा प्रभाव पड़ा है। सभी प्राणियों में आत्मा की स्थिति को स्वीकार कर और उस आत्मा को एक ही ब्रह्म का स्वरूप समझ कर भारतीय मानव-मानव में बाह्य भेद को महत्व नहीं देता। इसी प्रकार पारलौकिक जीवन और पारमार्थिक आदर्श को प्रमुख महत्व देने के कारण भारतीय संस्कृति व्यक्तिगत और सामाजिक भेदों की ओर उदार सहनशीलता के साथ देखती है। इस कारण सांसारिक जीवन के भेद जीवन में कटुता नहीं उत्पन्न कर पाते।

इसी आध्यात्मिक परम्परा के अनुकूल ही हिन्दुस्तानी संस्कृति कल्पना, भावना और उदारता से भरे एक सौम्य व्यक्तित्व को आदर्श मानती है। मनुष्य के व्यक्तित्व में अहंभाव के स्थान पर विनय-भावना को गौरव दिया जाता है। श्रद्धा, संयम और त्याग भारत की संस्कृति में प्रमुख गुण बतलाये गये हैं। इन आदर्शों के अनुसार अपना जीवन बनानेवाले भारत में अनेक लोग हुए हैं, जिनमें से विशेष गुण-सम्पन्न लोगों की परम्परा प्राचीन काल से इस युग तक लोगों को मार्ग दिखलाती हुई मिलती है।

धर्म के मामले में भारतीय संस्कृति का दृष्टिकोण विशाल है। भारतीय संस्कृति मानती है कि सत्य एक

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

है, लेकिन वह अनेक रूपों में हमारे सामने आता है। विभिन्न धर्मों को ईश्वर तक पहुँचाने के विभिन्न मार्ग कहा गया है। भारतीय परम्परा यह भी मानती है कि व्यक्ति की रुचि की विभिन्नता और उसकी आध्यात्मिक उन्नति के अनुसार उसके द्वारा चुना गया धर्म का मार्ग अलग हो सकता है। इन सब विचारों की पृष्ठभूमि में भारतीयों को धार्मिक सहिष्णुता को व्यवहार में प्रयुक्त करने में कोई कठिनाई नहीं होती। अशोक के बारहवें शिला-अभिलेख में सहिष्णुता का आदर्श बड़े ही सुन्दर शब्दों में व्यक्त किया गया है। इसी कारण भारत में हमें धार्मिक विद्वेष अथवा धार्मिक कारणों से दूसरों को उत्पीड़ित करने के उदाहरण केवल अपवाद के लिये मिलते हैं। भारत के बाहर से भी दूसरे धर्म और संस्कृतियों के लोग अपना देश छोड़ने पर विवश हो कर भारत में आये हैं और यहाँ सुख और शान्ति के साथ उन्हें अपने धार्मिक विश्वासों और आचारों को मानने का अवसर और सुविधा मिली है। भारत में सभी को पूजा और उपासना की स्वतंत्रता रही है। यह परम्परा विश्व के सभी देशों के लिये अनुकरणीय है, विशेष रूप से इसलिये कि इतने दिनों के सभ्यता के इतिहास के बाद भी कुछ लोग अपने विपक्षी धर्मों और मतों के प्रति बर्बर असहिष्णुता दिखलाते हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

धार्मिक स्वतंत्रता के साथ ही साथ भारत में विचार-स्वतंत्रता का भी आदर्श रहा है। किसी भी व्यक्ति को उसके विचारों के कारण दंडित नहीं किया जाता था। सभी यहाँ अपनी बुद्धि के अनुसार अपने विचारों को विकसित कर सकते थे। इसीलिये भारत में दर्शन-क्षेत्र में हमें अद्‌भुत विविधता दिखलाई पड़ती है। चार्वाक और बौद्ध जैसे नास्तिक धर्मों को भी अपने विचारों की स्वतंत्रता प्राप्त थी। विचारों की इस स्वतंत्रता के कारण ही अनेक विचारधाराओं के परस्पर मिलन के फलस्वरूप भारत में नवीन और उच्च विचारों का जन्म हुआ है।

भारत के उदार दृष्टिकोण के कारण बहुत प्राचीन काल से ही उसके विचारकों ने मानववाद और विश्व-बन्धुत्व के विचारों को प्रतिपादित किया है। भारत में मानववाद के पीछे दार्शनिक विचारों की पृष्ठभूमि है। यहाँ संसार को ब्रह्ममय कहा गया है। इसीलिये यहाँ मानव-मानव को ही समान नहीं समझा गया है, यहाँ तो पशु, पक्षी, वृक्ष और प्रकृति के साथ भी आदमी साहचर्य की भावना का अनुभव करता है। प्रकृति केवल हमारे सुख और मनोरंजन के लिये नहीं है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति को अपने भौतिक सुख के लिये वश में करने की लालसा कम दिखलाई पड़ती है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भारत के विचारकों ने इसीलिये प्राणिमात्र के सुख और कल्याण की कामना की है। आधुनिक काल के उदार और धर्मार्थ सेवाओं के शुरू होने से बहुत पहले ही हम देखते हैं कि सम्राट् अशोक ने केवल मनुष्यों के लिये ही नहीं, बल्कि पशु-पक्षियों की चिकित्सा के लिये भी व्यवस्था की थी।

राष्ट्रवाद के भयानक परिणामों को देखकर हम प्राचीन भारत के उन विचारकों की सराहना किये बिना नहीं रह सकते, जिन्होंने बहुत पहले ही यह कहा था कि यह मेरा है और यह दूसरे का है, ऐसा विचार छोटे दिल के लोग करते हैं। उदार चित्तवालों के लिये तो पूरी पृथ्वी ही उनका कुटुम्ब है। आधुनिक काल में भी हम कई भारतीय विचारकों को ऐसे भावों को व्यक्त करते हुये देखते हैं।

भारत में ज्ञान की खोज की परम्परा और उसके आदर्श भी बहुत महान् हैं। ज्ञान संसार की सबसे पवित्र वस्तु मानी गई है। ज्ञान की रक्षा करने और उसको बढ़ाने के लिये भारतीय सदैव तैयार रहते हैं। ज्ञान की खोज के लिये भारतीयों का दृष्टिकोण बड़ा व्यापक रहा है। वे किसी से भी कुछ सीखने में संकोच नहीं करते। किसी भी जाति को, यदि उसके पास

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कोई ज्ञान है, वे सर्वोच्च आदर देते हैं और उससे उन अच्छी बातों को सीखते हैं। आज भी हम देखते हैं कि भारत ने ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में दूसरे देशों से कुछ सीखने में अपने को पीछे नहीं रखा है, अथवा झूठे अभिमान के भाव में नहीं फँसा रहा है।

भारतीय संस्कृति में यह विशेषता है कि वह परिस्थिति के परिवर्तन के साथ बाह्य प्रभावों को लेकर नये रूप में सामने आती है; इसीलिये भारतीय संस्कृति सदैव नवीन और सजीव बनी रहती है। इसी के कारण भारतीय संस्कृति बाह्य तत्वों के आक्रमण के सम्मुख नष्ट नहीं हुई है, वह तो नये प्रभावों को भी अपना ही अंग बनाने में सफल हुई है। किन्तु इन प्रभावों को ग्रहण करते हुये भी उसने अपना स्वाभाविक और मौलिक रूप नहीं बदला है। भारतीय संस्कृति की यह ग्रहणशीलता और उस की समन्वय की प्रवृत्ति उसके जीवन के सभी अंगों में दिखलाई पड़ती है। भारत ने अनेक जातियों, भाषाओं, धर्मों और विचारों को ग्रहण करके उनका सुन्दर समन्वय उपस्थित किया है। भारतीय संस्कृति की कोई एक उत्पत्ति नहीं है। यह उस की उदार और सहनशील प्रवृत्ति का कारण भी है और साथ ही प्रभाव भी।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भारतीय संस्कृति ने नैतिक आदर्शों को भी बढ़ावा दिया है। प्रायः धर्म की व्याख्या नैतिक गुणों और सदाचार के रूप में की गई है। इस दृष्टि से बौद्ध धर्म का भारतीय संस्कृति में विशेष महत्व है। बौद्ध धर्म ने धर्म के संकुचित अनुष्ठानों के स्थान पर सदाचार के आदर्श को महत्व दिया।

जिन नैतिक गुणों पर भारत में विशेष रूप से जोर दिया गया उसमें अहिंसा का ऊँचा स्थान है। अहिंसा के सिद्धान्त को भारत ने ही संसार में फैलाया है। पहले तो यज्ञों में अनेक पशुओं की बलि होती थी किन्तु नये सुधारवादी धर्मों ने इसका विरोध किया। बौद्ध धर्म अपने अहिंसा और जीव-प्रेम के सिद्धान्त के लिये संसार में प्रसिद्ध है। किन्तु भारत में जैन धर्म के अनुयायियों की अहिंसा और भी उच्च प्रकार की थी। अहिंसा के इस विचार ने बाद के प्रायः सभी धर्म और समाज के सुधारकों को प्रभावित किया है। गाँधीजी को भी उनका अहिंसा का सिद्धान्त इसी परम्परा से प्राप्त हुआ था। उन्होंने अहिंसा का राजनीति में भी सफल प्रयोग किया। उन्होंने भारत की स्वाधीनता की लड़ाई अहिंसा के अस्त्र से ही लड़ी। इसी का परिणाम था कि स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद भी भारत और इंग्लैण्ड के संबंध कटु नहीं हो पाये।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भारत की धर्मप्रधान परम्परा के कारण आधुनिक काल के प्रारंभ में कुछ योरपीय लोग, जिन्हें भारतीय संस्कृति का सच्चा ज्ञान नहीं था, यह कहते थे कि भारतीय संस्कृति एकांगी, जीवन के प्रति उदासीन और निष्क्रिय है; किन्तु यह दोषारोपण उचित नहीं है। भारत का दृष्टिकोण जीवन के प्रति नकारात्मक नहीं रहा है। उसने मनुष्य के भौतिक जीवन का तिरस्कार नहीं किया है। भारत ने सदैव पारलौकिक और सांसारिक का अन्तर समझा है। यद्यपि पारलौकिक सुख को भारतीय संस्कृति ने सबसे ऊँचा स्थान दिया है किन्तु इसके लिये उसने इस संसार के सुख की उपेक्षा नहीं की है। हम देखते हैं कि भारत ने संसार में सुख की प्राप्ति और आनन्द की वृद्धि के लिये प्रयत्न किया है। भारतीय संस्कृति ने तो जीवन के सभी अंगों के सम्पूर्ण विकास को ही अपना लक्ष्य बनाया है। भारतीय विचारकों ने यह चेष्टा की है कि मनुष्य की जितनी भी प्रवृत्तियाँ या आवश्यकताएँ हैं, उन सभी की समान रूप से पूर्ति होनी चाहिये। ऐसा न हो कि किसी एक प्रवृत्ति को अधिक महत्व देने के कारण अन्य आवश्यकताएँ अधूरी रह जाएँ। सभी प्रवृत्तियों में सुन्दर समन्वय का सफल प्रयास भारतीय संस्कृति की विशेषता है, जो

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस भौतिकवादी युग में विश्व को सही मार्ग दिखला सकता है। भारतीय विचारकों ने मनुष्य के जीवन के चार लक्ष्य या पुरुषार्थ बतलाये हैं—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। मोक्ष निःसन्देह सबसे ऊँचा है। लेकिन इस का संबंध परलोक से होने के कारण संसार की दृष्टि से तीन लक्ष्य हैं—'धर्म, अर्थ और काम।' इन में धर्म प्रधान तो है किन्तु धर्म, अर्थ और काम का महत्व नहीं छीन सकता। तीनों का अपना-अपना महत्व है। भारतीय संस्कृति का आदर्श है कि तीनों का समान रूप से पालन होना चाहिये। भारतीयों ने जीवन के आनन्द और इन्द्रिय-जन्य सुखों को बुरा कह कर छोड़ नहीं दिया है। मनुष्य के जीवन में उनकी आवश्यकता समझ कर उन का स्वस्थ और संयत पालन ही आदर्श बनाया गया है।

भारतीय संस्कृति ने अपनी पारमार्थिक प्रेरणा के कारण राजनीतिक सफलता और विजय को भी अधिक महत्व नहीं दिया है। भारत ने अपने इतने लम्बे इतिहास में कभी भी अपनी सीमाओं को पार कर दूसरे देशों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयत्न नहीं किया। राजनीतिक क्षेत्र में भी भारतीय संस्कृति प्रेम, अहिंसा और सद्भाव के आदर्शों को मानती है। भारतीय संस्कृति की विजय तलवार और सेना की

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शक्ति के द्वारा नहीं हुई है। उसने अपना प्रभाव प्रेम और शान्ति के द्वारा फैलाया है। प्राचीन काल में भारतीय संस्कृति के तत्व ईरान से चीन के समुद्र तट तक और साइबेरिया से जावा और बोरनियो के द्वीपों तक फैले थे। एशिया के विशेष रूप से दक्षिणी-पूर्वी-एशिया के देशों की संस्कृति के निर्माण में भारतीय संस्कृति के अनेक आदर्शों और तत्वों का गहरा प्रभाव रहा है। मध्य-युग में भारत का सक्रिय प्रभाव क्षीण हो जाने पर भी हम आज इन देशों की संस्कृति में भारतीय संस्कृति के निर्माणकारी तत्वों और अच्छे प्रभावों को देख सकते हैं। उल्लेखनीय है कि भारत ने प्राचीन काल में भी इन देशों की सांस्कृतिक प्रगति में केवल सहायता ही की है, इसने कभी अपनी अनुकूल परिस्थिति का लाभ उठा कर अपना राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास नहीं किया है।

इस सांस्कृतिक परम्परा के अनुकूल ही वर्तमान काल में भारत ने अपनी विदेशी नीति का स्वरूप निर्धारित किया है। वह साम्राज्यवाद के विरुद्ध है और इसीलिये एशिया और अफ्रीका के राज्यों को अपनी स्वतंत्रता के संग्राम में भारत की सहायता और सहानुभूति सदैव प्राप्त रहती है। भारत अन्तर्राष्ट्रीय सङ्घा-

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वना और शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्त में विश्वास करता है। विश्व में शान्ति स्थापना के लिये और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने के लिये वह निरन्तर प्रयत्न करता है।

भारत ने प्रजातंत्रात्मक शासन-विधि को अपना लिया है। उसने शान्तिपूर्ण और प्रजातंत्रात्मक विधि से समाजवादी व्यवस्था की स्थापना की ओर सफल कदम बढ़ाये हैं। योजनाओं के अनुसार देश की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दशा सुधारने में भारत ने प्रशंसनीय सफलता प्राप्त की है।

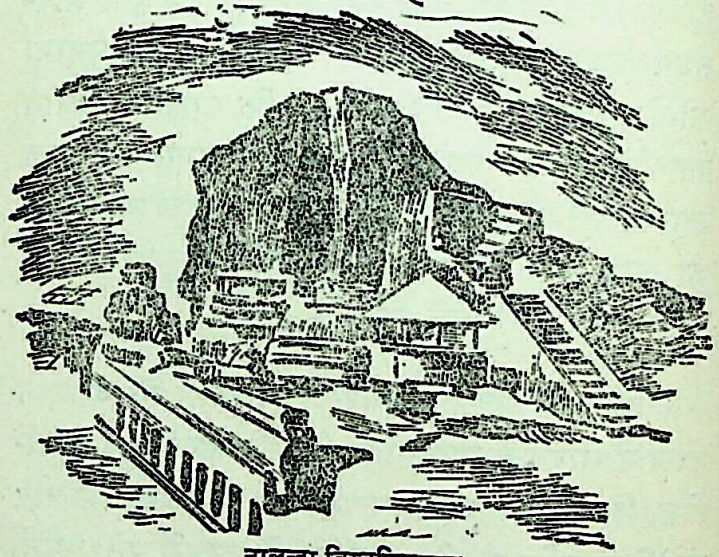

नालन्दा विश्वविद्यालय

शिक्षा के क्षेत्र में भी भारतीय संस्कृति की देन उल्लेखनीय है। तक्षशिला के विश्वविद्यालय की स्था-

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पना उस समय हुई थी जब अन्य देशों में शिक्षा की व्यवस्था विकसित नहीं हो पाई थी। बाद में नालन्दा विश्वविद्यालय ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। इन विश्वविद्यालयों में एशिया के विभिन्न देशों के विद्यार्थी सभी विषयों की शिक्षा प्राप्त करने के लिये आते थे।

भारतीय साहित्य भी अपनी उत्कृष्ट रचनाओं के कारण संसार में गौरव पाता है। वेदों की ऋचाएँ, उपनिषदों का चिन्तन, कालिदास की रचनाओं का सौन्दर्य, महाभारत का व्यावहारिक ज्ञान, गीता की नैतिक शिक्षायें, पंचतंत्र की शिक्षात्मक कथायें, सन्त

प्रेमचन्द

कवियों के भक्ति के गीत, प्रेमचन्द की भारत के सरल लोगों की स्वाभाविक कहानियाँ और रवीन्द्र की कविता

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भारत ही नहीं विश्व की सम्पत्ति हैं और सभी देशों में इनका आदर और प्रभाव देखा जा सकता है।

संस्कृत भाषा को संसार के विद्वान् सबसे अधिक पूर्ण, सम्पन्न और परिष्कृत भाषा मानते हैं। इस भाषा का व्याकरण अत्यधिक वैज्ञानिक है। इस भाषा के उदाहरण पर ही संसार में तुलनात्मक भाषा-विज्ञान का आरम्भ हुआ है।

अजन्ता का एक भित्ति-चित्र

कला के क्षेत्र में भी भारत की परम्परायें विशेष महत्व की हैं। कला में बाह्य स्वरूप के चित्रण को महत्व नहीं दिया गया है। कलाकार का लक्ष्य मन के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अन्तर्भावों की अभिव्यक्ति है। दक्षिणी भारत के मन्दिर, अजन्ता के चित्र और बौद्ध प्रतिमायें कला की उत्कृष्ट कृतियाँ हैं।

विज्ञान के क्षेत्र में भी भारत ने कुछ उल्लेखनीय खोज की। उसकी संख्या-पद्धति और दशमलव-पद्धति को अरब लोगों ने सीख कर योरप को दिया। गणित और ज्योतिष में भी भारत ने बहुत अधिक उन्नति की थी। रसायनशास्त्र में भारत की प्रगति धातुओं के अध्ययन के मामले में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। पक्के रंगों का बनाना, चीनी का उत्पादन और धातुओं के ऊपर रासायनिक क्रियाओं को करने में भारतीय प्राचीन काल में सिद्धहस्त थे। अरब के लोग भारतीयों की श्रेष्ठता चिकित्सा के क्षेत्र में भी मानते थे और उनसे इस शास्त्र की शिक्षा लेने के लिये तैयार थे। भारतीयों की तर्क-प्रणाली भी वैज्ञानिक और विकसित थी।

एशिया की संस्कृति के निर्माण में दूसरी प्रमुख धारा चीन की संस्कृति की है। पूर्वी एशिया और दक्षिणी-पूर्वी एशिया के अनेक देशों की संस्कृतियों पर इस संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है।

भारत की संस्कृति की भाँति चीन की संस्कृति भी बहुत पुरानी है। इस का प्रवाह भी प्राचीन काल

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

से आज तक चला आ रहा है। इस संस्कृति में भी कुछ प्रेरक तत्व ऐसे सजीव और स्थायी हैं कि चीन की संस्कृति का जीवन अभी तक बना है।

चीन की संस्कृति के स्थायी होने का एक प्रमुख कारण यह है कि उसके समाज में सर्वोच्च स्थान उन व्यक्तियों का है, जो विद्या और गुण से सम्पन्न हों। जिन्होंने अपना जीवन विद्या के अर्जन और गुणों की प्राप्ति में लगा दिया, उन्हीं को चीन के समाज ने आदर दिया। आदर धन के कारण नहीं मिलता था। चीन के इस आदर्श का ज्ञान इसी बात से होता है कि चीन के लोग शासन का सारा प्रबंध उन लोगों को देते थे, जो विद्वान् और साहित्यकार होते थे। चीन में बहुत पहले ही शासन के अधिकारियों की नियुक्ति उनके ज्ञान और अध्ययन की परीक्षा के आधार पर होती थी। ज्ञान के लिये समाज में ऐसी आदर की भावना होने के कारण विद्वानों, साहित्यकारों और रचनात्मक कलाकारों के लिये यह संभव हो सका कि वे शारीरिक और सांसारिक आवश्यकताओं के लिये चिन्ता न कर के अपना समय और अपनी योग्यता को अपनी प्रवृत्ति के अनुसार समाज के लिये लाभदायक कार्यों में लगा सकें।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ऐसा प्रतीत होता है कि चीन के विस्तृत और सुविशाल देश ने उसकी संस्कृति को प्रभावित किया और उसके दृष्टिकोण को व्यापक और विशाल बना दिया। चीन के विचारक केवल अपने देश की संकुचित सीमाओं की दृष्टि से ही नहीं सोचते थे। उनकी कल्पना और उनका विचार अपने देश की सीमा के बाहर के समाज के लिये भी होता था। इसीलिये हम देखते हैं कि चीन के दार्शनिक और विचारकों ने बहुत पहले ही विश्व-कल्याण और विश्व-बन्धुत्व की बात सोची थी।

चीनी संस्कृति भी बहुत अधिक सहिष्णु है। चीन के समाज में कट्टरता अथवा अनुदारता देखने को भी नहीं मिलती। इसीलिये चीन के लोगों ने विदेश से आये लोगों, संस्कृतियों और धर्मों का खुले हृदय से स्वागत किया और वे स्वयं भी बिना किसी संकोच की भावना के दूसरे देशों में जाते थे। वे मध्य-एशिया, पार्थिया, ईरान, भारत और रोम के लोगों से एक ही प्रकार मिलते थे और उनसे सांस्कृतिक संबंध रखते थे। चीन में कई धर्म साथ-साथ रहे हैं; लेकिन हमें चीन के इतिहास में कभी किसी धार्मिक युद्ध का अथवा धर्म के नाम पर किसी अत्याचार का उल्लेख नहीं मिलता। धार्मिक सहिष्णुता की यह परम्परा चीन में

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तक वर्तमान काल में मिलती है। एक चीनी बौद्ध धर्म, ताओ धर्म और कन्फ्यूशियस के सिद्धान्तों को समान रूप से मानता है।

चीन की सर्वश्रेष्ठ विशेषता है उसकी संस्कृति की शान्तिप्रियता। उसका इतिहास अपने विजेताओं के कारण नहीं बल्कि अपने शान्ति के दूतों और विचारकों, कलाकारों और साहित्यकारों के कारण प्रसिद्ध है। चीन ने युद्ध को सदैव घृणा की दृष्टि से देखा है। कभी-कभी युद्ध करने के लिये बाध्य होने पर भी चीन के लोगों ने युद्ध की निन्दा की है। चीन का कवि पहले तो युद्ध के विषय में लिखना ही नहीं चाहता; और यदि उसने कभी कुछ लिखा भी, तो उसमें युद्ध की विनाशकारी भयंकरता का ही वर्णन होगा। इन की इस प्रवृत्ति का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि यद्यपि इन्होंने बारूद का आविष्कार किया, फिर भी इन्होंने उसका प्रयोग युद्ध में विध्वंस के लिये नहीं किया। चीन की संस्कृति में युद्ध के कार्य को नीच कर्म समझा जाता था और इसीलिये प्रायः लुटेरों और अपराधियों को सेना में भरती किया जाता था। इस प्रकार शान्ति-स्थापना के लिये जितनी उपयुक्त चीन की परम्परा है, उतनी संसार के अन्य किसी भी देश की संस्कृति की नहीं है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चीन की संस्कृति की सर्वोत्कृष्ट देन उस की दार्शनिक विचारधारा है। योरप के अनेक प्रसिद्ध विचारक चीन की दार्शनिक परम्परा से प्रभावित हुए हैं। आज के संसार में प्रचलित अनेक विचारों को हम चीन के प्राचीन विचारकों की कृतियों में भी देखते हैं।

कन्फ्यूशियस

कन्फ्यूशियस ने बहुत पहले ही लोकसत्ता के विचार का समर्थन किया था। मोत्सू ने विश्वबन्धुत्व और सार्वभौम प्रेम का विचार प्रस्तुत किया और इसी प्रेम के आधार पर एक विश्व-राज्य की कल्पना रखी। मेन्सियस ने बुरे शासन के लिये शासकों की भर्त्सना की है और अत्याचारी शासक को सिंहासनच्युत करने

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के लिये लोगों को प्रेरित किया है। लाओ-से ने प्रकृति-पूजा का जो सिद्धान्त रखा है, वह आज के कोलाहलमय जीवन में शान्ति और सन्तोष दे सकता है।

चीन ने विश्व की संस्कृति को कुछ ऐसी सामग्रियाँ दी हैं, जो हमारे दैनिक जीवन में अत्यधिक महत्व की हैं और जिन्होंने संसार की सभ्यता को बहुत अधिक प्रभावित किया है। इनमें सर्वप्रथम हम 'कागज' का उल्लेख कर सकते हैं। चीन में कागज बहुत प्राचीन काल ही में बनने लगा था। तीसरी शताब्दी ईसवी के बाद से कागज चीन के बाहर भेजा जाने लगा। चौथी शताब्दी के मध्य में समरकन्द में कागज बहुत अधिक बनता था। यहाँ से कागज का इस्तेमाल अरब पहुँचा, जहाँ से कुछ समय बाद योरपवालों ने कागज का इस्तेमाल करना सीखा। संसार के सभी देशों में जनप्रिय पेय चाय, ताश के पत्ते, सोयाबीन की फलियाँ, चीनी मिट्टी के बर्तन, तश्तरी, प्याले और अचार आदि रखने के मजबूत भाण्ड का चलन चीन से ही शुरू हुआ है।

योरप और उसके माध्यम से पूरे विश्व के इतिहास और उस की संस्कृति के स्वरूप पर चीन की संस्कृति का प्रभाव देखा जा सकता है। चीन के द्वारा 'बारूद'

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के आविष्कार को अरबों ने सीखा, जिनसे इसका प्रयोग योरप पहुँचा। योरप में इसने युद्धों का इतिहास ही बदल दिया। इससे योरप के समाज में सामन्तों की शक्ति बिल्कुल घट गई, जिसके कारण समाज में व्यापारी वर्ग का महत्व बढ़ा। दूसरा क्रान्तिकारी प्रभाववाला आविष्कार कुतुबनुमा की डिबिया थी। इसका उपयोग योरप ने अरबों के माध्यम से चीन से ही पाया था। इसके कारण ही भौगोलिक यात्रायें सम्भव हो सकीं। इन यात्राओं के द्वारा ही योरप का संसार के अनेक भागों पर प्रभुत्व स्थापित हुआ। इन खोजों ने योरप के लोगों का दृष्टिकोण व्यापक कर दिया, जिसके कारण ही योरप में बाद में होनेवाले क्रान्तिकारी सांस्कृतिक परिवर्तन संभव हो पाये। तीसरा प्रमुख आविष्कार है—मुद्रण कला का। यह भी अरब के माध्यम से चीन से योरप पहुँचा। छपाई की सुविधा के कारण पुस्तकों को अधिक संख्या में छापा जा सकता था। इस प्रकार ज्ञान की सुलभता के कारण ही योरप में पुनरुज्जीवन नाम की बौद्धिक क्रान्ति और धर्मसुधार नाम की धार्मिक क्रान्ति संभव हो सकीं। योरप के बौद्धिक व्यक्तित्व के निर्माण में इन क्रान्तियों का जो महत्व है, उसे देखकर हम चीन के ऋण को आसानी से घटा नहीं सकते।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पूर्व की संस्कृतियों में जापान की संस्कृति का भी उल्लेख आवश्यक है। जापान की संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता उसकी सृजनात्मक अनुकरण-शीलता है। प्राचीन काल में भी जापान ने अन्य देशों से संस्कृति के तत्व लेने में कोई संकोच नहीं किया। ये प्रभाव भारत और मुख्य रूप से चीन से प्राप्त हुए थे। किन्तु जापान ने इनको लेकर इनको अपने रंग में रँग लिया। जापान ने योरप में फैले इस विचार को गलत सिद्ध कर दिया कि पूर्व के देशों के लोग लकीर के फकीर हैं, वे नये प्रभावों के अनुसार अपने को बदल नहीं सकते। जापान ने उन्नीसवीं शताब्दी में पाश्चात्य संस्कृतियों के सम्पर्क में आ कर यह समझा कि अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिये उसे इन देशों की वैज्ञानिक और सैनिक परम्परा को अपनाना होगा। बहुत थोड़े ही समय में जापान ने इतनी प्रगति कर ली कि शीघ्र ही वह अपने गुरु देशों से भी आगे बढ़ गया। १९०४ ई० में रूस की जापान के हाथों पराजय से जापान ने अपनी गुणग्राही प्रतिभा का सिक्का जमा दिया। इस विजय का एशिया के देशों पर अद्भुत प्रभाव पड़ा। उनमें आत्मविश्वास की भावना बढ़ी। वे समझने लगे कि योरप की संस्कृति के श्रेष्ठ तत्वों को ले कर वे भी संसार

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

की दौड़ में आगे बढ़ सकते हैं। इस प्रकार एशिया में नव-जागरण की भावना को जन्म देने और मजबूत करने का श्रेय जापान को ही है।

जापान की संस्कृति की दूसरी विशेषता कर्तव्य-पालन की भावना और राष्ट्र-प्रेम का शक्तिशाली विचार है। इस प्रवृत्ति के कारण ही साधारण जापानी बिना अधिक तर्क-वितर्क किये देश के शासक या नेताओं की आज्ञाओं और नीतियों का पालन करता है। इस प्रकृति के कारण परिवर्तन या सुधार की गति तेज हो पाती है। ऐसी प्रवृत्ति जापान के सुदीर्घकाल तक सामन्तवादी व्यवस्था में रहने के कारण हुई है। किन्तु इससे भी अधिक गहरा प्रभाव वहाँ के 'शिण्टो' धर्म का रहा है। शिण्टो का अर्थ है—देवताओं का मार्ग। इसका एक स्वरूप सम्राट् की राष्ट्रीय पूजा का है। वर्ष भर में सात बार सम्राट् के पूर्वजों की पूजा होती थी। कोई कार्य आरंभ करने से पहले भी ऐसी पूजा की जाती थी। इस धर्म में सम्राट् के प्रति श्रद्धा की भावना को बहुत अधिक महत्व दिया गया है।

जापानी संस्कृति में उच्च कोटि का सौन्दर्य-प्रेम देखने को मिलता है। जापानी अपने दैनिक जीवन की प्रत्येक वस्तु को अपनी कलाप्रियता से सुन्दर बना

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

देता है। छोटी-से-छोटी वस्तु भी उन के सौन्दर्य-प्रेम का प्रमाण देती है। उनके पंखे, प्याले, खिलौने और स्वच्छ

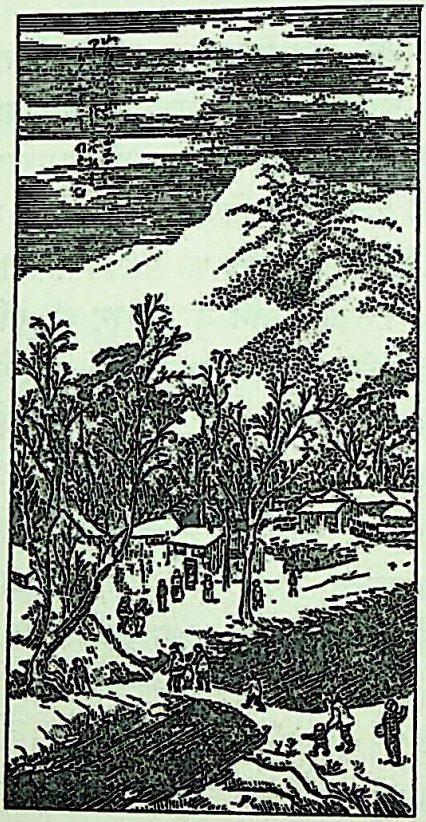

जापानी चित्रकला

घर, सभी उनकी परिष्कृत रुचि के परिचायक हैं। इसी कारण जापानी चित्रकला ने प्रथम परिचय में ही

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

योरप के कला के पारखियों को प्रभावित किया। जापानी समाज की सौन्दर्य-प्रेम की भावना प्रकृति के प्रति गहरे अनुराग के रूप में भी प्रकट होती है। यह विशेषता जापानी कविता और चित्रकला दोनों में ही देखने को मिलती है। इस प्रेम के कारण जापानी प्रकृति को अपने बहुत निकट पाता है। वह प्रकृति में भी अपने मन के भावों का प्रतिबिम्ब देखता है। प्रकृति के अनन्त और अपार सौन्दर्य से तो उसके हृदय में अपूर्व आनन्द का उदय होता है; किन्तु उसी सौन्दर्य की क्षणभंगुरता उसके हृदय में आकुल करुणा और स्नेह को उकसाती है। जीवन के प्रति सौन्दर्य-प्रेम की यह जापानी परम्परा संसार को सुख, सन्तोष और शान्ति दे सकती है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

संस्कृति की नई व्यवस्था

इस समय संसार में सांस्कृतिक आदर्श और जीवन एक ऐसे दोराहे पर पहुँच गये हैं, जो उनको एक नई दिशा की ओर ले जायेगा। विश्व-संस्कृति ऐसी स्थिति में पहुँच गई है कि उसे अपने भविष्य के बारे में कोई निश्चयात्मक निर्णय करना होगा। यह परिस्थिति किसी एक देश की संस्कृति के लिये नहीं है। यह समस्या तो सभी देशों की संस्कृतियों के सम्मुख उपस्थित हुई है। इसीलिये वर्तमान समस्या का महत्व और अधिक हो जाता है। विश्व-संस्कृति को या तो अपने आदर्शों में क्रान्तिकारी परिवर्तन करना होगा, या वह छिन्न-भिन्न हो जायेगी। वर्तमान काल में संस्कृति के पुराने आदर्शों और व्यवस्थाओं को हम हिलते हुए पा रहे हैं। हमारी पुरानी मान्यताएँ गिरती जा रही हैं। हमें ऐसी प्रेरणा की जरूरत है, जो हमें इस विषम स्थिति से बचा कर हमें एक नये रास्ते पर ला कर खड़ा करे।

जो नवीन परिस्थितियाँ हमारे पुराने आदर्शों को चुनौती दे कर सांस्कृतिक जीवन को शिथिल कर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रही हैं, उनमें प्रमुख महत्व भौतिकवादी प्रवृत्ति का है। विज्ञान और उसके द्वारा बनाई गई मशीनों ने हमारे सुख के साधनों में वृद्धि तो अवश्य की है; किन्तु साथ ही इन्होंने मानव की मानवता को कुचल कर उसे निष्प्राण कर दिया है। मानव विज्ञान का दास बन गया है। मशीनों का इस्तेमाल करते-करते वह भी यन्त्रवत् हो गया है। उसमें उच्च भावों और आदर्शों का अस्तित्व नहीं रहा। उस का जीवन भी मशीन की भाँति बिना किसी भावना और आदर्श का हो गया है। विज्ञान और मशीनों ने मानव के शरीर के लिये तो सभी सुखों की व्यवस्था की है; किन्तु उस का अन्तर्मन और उसकी आत्मा उपेक्षित-सी मरती जा रही है। मानव केवल शरीर ही नहीं है। उसके व्यक्तित्व में अशरीरी आत्मा का महत्व उसके बाह्य कलेवर और आवरण से कम नहीं है, बल्कि अधिक ही है। यह भौतिकवादी परम्परा अब अप्रत्यक्ष रूप से पूरी मानव-संस्कृति को दबाती चली जा रही है। इस भौतिकवादी प्रवृत्ति का सबसे ज्वलन्त उदाहरण मार्क्सवादी विचारधारा में मिलता है। इस विचार के अनुसार तो मनुष्य आर्थिक आवश्यकताओं का एक समूह-मात्र रह जाता है। उस का पूरा जीवन, उसकी सारी व्यवस्थायें और उसके सारे आदर्श रोटी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

की समस्या के चारों ओर घूमते हैं। यह तो हमें मानना ही होगा कि अपने दृष्टिकोण से मार्क्सवादी विचारधारा ने संसार को यह विचार स्वीकार करा दिया है कि मानव-समाज के सुख के लिये मानव की सांसारिक आवश्यकताओं की पूर्ति की पूरी व्यवस्था आवश्यक है। किन्तु शारीरिक आवश्यकता बहुत अधिक महत्वपूर्ण होने पर भी सभी कुछ नहीं है। मार्क्सवाद और उससे प्रभावित भौतिक विचारधारा मनुष्य के स्वरूप के दूसरे अंगों को बिल्कुल स्थान नहीं देतें। इस प्रकार मानव अपूर्ण ही रह जाता है।

विश्व-संस्कृति के स्वरूप को दूसरी आशंका इस बात की है कि समाज में व्यक्ति का महत्व घटता जा रहा है। समाज या राज्य के बढ़ते प्रभाव के सम्मुख व्यक्ति का अस्तित्व ही खतरे में दिखलाई पड़ता है। समाजवाद तो समाज के हित के लिये व्यक्ति को बिल्कुल नगण्य बतलाता है और व्यक्ति के जीवन का पूरा नियन्त्रण राज्य को देता है। अधिनायक-तन्त्र (डिक्टेटरशिप) में भी व्यक्ति की स्वतंत्रता बन्धनों में जकड़ी सिसकती रहती है। राज्य को महत्व देने की यह प्रवृत्ति इतनी बलवती हो गई है कि अनेक देश जो इन व्यवस्थाओं में विश्वास नहीं करते, वे भी व्यक्ति के जीवन में राज्य के हस्तक्षेप और नियन्त्रण का समर्थन करते हैं। राज्य के द्वारा समाज के जीवन पर नियन्त्रण

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के पक्ष में यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति को निरंकुश स्वतंत्रता देने से प्रगति की गति धीमी हो जायगी। किन्तु इसके साथ-ही-साथ हमें यह न भूलना चाहिए कि संस्कृति या समाज की सच्ची प्रगति बिना व्यक्ति की स्वतंत्रता के संभव नहीं है। भाव, विचार और कार्य की स्वतंत्रता रहने पर ही मनुष्य अपनी प्रवृत्तियों का समुचित विकास और उपयोग कर सकता है। संसार की सभी संस्कृतियों का अध्ययन करने पर हम देखते हैं कि सभी उत्कृष्ट सांस्कृतिक प्रगतियाँ विचार-स्वतंत्रता के वातावरण में हुई हैं। मनुष्य का अपना व्यक्तित्व होता है। सभी व्यक्तियों को एक ही साँचे में ढालने की कोशिश करके हम मानवता का अहित करेंगे। विविध व्यक्तित्व के आदमियों के परस्पर मिलन से ही संस्कृति की वास्तविक प्रगति होती है।

विश्व की संस्कृति को मानव के संकुचित विचारों और आदर्शों से भी भय है। उदाहरण के लिये हम राष्ट्रीयता का विचार लें। यह एक पवित्र और हितकारी विचार है, जिससे मानव-समाज का कल्याण हो सकता है। किन्तु राष्ट्रीयता की भावना संकुचित हो कर अन्य राष्ट्रों से विद्वेष के विचार में बदल सकती है। आदमी-आदमी में भेद उत्पन्न करने वाले विचारों को हमें ध्यान में रखना होगा। देश,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जाति, धर्म और भाषा के आधार पर ऐसे भेदों को बढ़ाने की कोशिश की जाती है। फिर मनुष्य में लालच और प्रभुत्व की भी भावना होती है। वह अपने कमजोर पड़ोसी को पीड़ित करके अपना प्रभुत्व बढ़ाना चाहता है। इन कार्यों से संस्कृति के उच्च आदर्शों को ठेस पहुँचती है। अपने सीमित वर्ग या समूह के लिये प्रेम या भक्ति का विचार स्वयं ही बुरा नहीं है। मनुष्य के लिये यह आवश्यक है कि उसके लिये ऐसे समूह हों जिनके सुधार और प्रगति के लिये वह कार्य करे। लेकिन ऐसे सभी समूह शाश्वत नहीं हैं। समय के साथ उनका निर्माण हुआ है। फिर इन समूहों में भी हम कई दायरे देखते हैं। आदमी की भक्ति का दायरा समूह के दायरे के विस्तार के साथ बढ़ता है। छोटे समूह की तुलना में उस की भक्ति बड़े समूह के लिये अधिक होनी चाहिये। इसलिये हमें यह स्वीकार करना होगा कि राष्ट्र जैसे बड़े समूह भी सबसे बड़े समूह नहीं हैं। इनमें सबसे बड़ा समूह पूरी मानव-जाति का है। मानव-समाज के लिये प्रेम और भक्ति की भावना ही सर्वोच्च महत्व की होनी चाहिये। पूरी मानव-संस्कृति के कल्याण के लिये हमें अपने क्षुद्र हितों का त्याग करना होगा। प्राचीन काल में जब आदमी भौगोलिक बन्धनों के कारण दूर तक संबंध नहीं स्थापित

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कर सकता था, उस समय मनुष्य के लिये ये छोटे समूह ही सब-कुछ थे। आज के जीवन में जब समय और स्थान की दूरी कोई महत्व नहीं रखती, हमारी संस्थाएँ भी व्यापक आधार पर बननी चाहिए।

विश्व की संस्कृति को एक खतरा ऐसी दिशा से है कि कभी-कभी हमें उसे पहचानने में भी गलती होती है। मानव-एकता के आदर्श से प्रेरित हो कर हम कभी-कभी उत्साह में पूरे मानव-समाज में सांस्कृतिक एकता स्थापित करना चाहते हैं। ऐसा प्रयत्न हितकारी नहीं है। संस्कृतियों का परस्पर आदान-प्रदान तो अच्छा है और उनमें सद्भाव बढ़ाने का भी प्रयत्न होना चाहिये। किन्तु जैसा हमने पहले कहा है, सभी संस्कृतियों में उन की प्रेरणा और उन की निजी आत्मा होती है। कोई भी संस्कृति किसी दूसरी संस्कृति से केवल वही तत्व ले सकती है, जो उसके आन्तरिक जीवन के अनुकूल हो। बिल्कुल विरोधी प्रवृत्तियों को एकत्र करने से विरूपता और समस्यायें ही उत्पन्न होंगी। संस्कृति के क्षेत्र में अन्धानुकरण नहीं होना चाहिये। सांस्कृतिक एकरसता यदि स्थापित हुई, तो वह स्वयं संस्कृति का गला घोंट देगी। विविधता प्रकृति का नियम है। उसी से संस्कृति और जीवन की उत्पत्ति और उन का

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विकास होता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम दूसरी संस्कृतियों को समझें। समझने से ही परस्पर सहानुभूति की भावना बढ़ेगी। ऐसी परिस्थिति में जो सांस्कृतिक आदान-प्रदान होगा, वह सुखकर और स्थायी होगा। संस्कृतियों का निरर्थक सम्मिश्रण और उससे उत्पन्न एकरसता अहितकारी हैं। सहानुभूति के साथ और आप-ही-आप हुआ सांस्कृतिक समन्वय श्रेयस्कर होगा।

विश्व की संस्कृति के लिये घातक इन प्रवृत्तियों के कारण हमें निराश होने की आवश्यकता नहीं है। हमें आशा के साथ सुखद भविष्य की ओर देखना है और उसके लिये उत्साह के साथ प्रयत्न करना है। भयंकर बादलों में भी मार्ग दिखलानेवाली सुनहली बिजली का प्रकाश होता है। फिर स्थिति पर विचार करने पर हम देखते हैं कि भविष्य में संभावनायें मानव-समाज के हित के लिये ही हैं। यह तो निश्चित है कि मानव-समाज अपनी एकता की ओर बढ़ रहा है। उसके लिये हमें अपने में परिवर्तन करना ही होगा। विचारणीय बात केवल इतनी है कि क्या हम परिस्थिति को समझ कर अपने को उसके अनुरूप स्वयं बदलते हैं अथवा प्रगति की गति विध्वंस के द्वारा हमें उसके लिये

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बाध्य करती है। हमारे रास्ते में हमारे पुराने कुसंस्कार और संकुचित विचार और उनसे संबंधित संस्थायें बाधा पहुँचाती हैं। हमें इनके स्थान पर नई मान्यताओं को स्वीकार करना होगा, अपने लिये नये आदर्शों की स्थापना करनी होगी और उनके अनुकूल ही नई संस्थायें और व्यवस्थायें बनानी होंगी।

भविष्य के विषय में इस आशावादी विचार का समर्थन कई प्रकार से किया जा सकता है। मानव-समाज सदैव प्रगति की ओर बढ़ता चला आया है। प्रगति करना तो मानव-समाज का धर्म है। पहले भी प्रगति के मार्ग में अनेक बाधायें आई हैं। लेकिन इनसे प्रगति का रास्ता रुका नहीं है। बाधाओं ने तो उल्टे प्रगति की धारा को और बल दिया है। मनुष्य में जो आत्म-तत्व है, वह उसे सदैव ऊपर की ओर और प्रगति की दिशा में बढ़ाता है। यह आत्म-तत्व सभी आदमियों में एक जैसा है। इसी के कारण सभी आदमियों में भविष्य के लिये एक सुखद और शान्तिपूर्ण कल्पना और उसके लिये उत्साह और लालसा दिखलाई पड़ती है। विज्ञान की खोजों के कारण मानव की इस एकता को एक बाह्य और सक्रिय रूप भी मिल गया है। इनकी सहायता से मनुष्य अपनी परिस्थिति की भयंकरता को सरलता से समझता है और भविष्य के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लिये योजना बनाने और उनके लिये कार्य करने में सभी का सहयोग पा सकता है। विज्ञान की सहायता से हम विश्व की सांस्कृतिक समस्या के लिये सम्पूर्ण मानव-जाति को संगठित कर सकते हैं। संयुक्त-राष्ट्र-संघ और उसके विभिन्न अंगों की सफलता देख कर ऐसा विश्वास होता है कि भविष्य के लिये हमें सफलता की आशा रखनी चाहिये।

बदलती हुई परिस्थिति में जो एक सन्तोष की बात है वह यह है कि धर्म का स्वरूप आज बदला हुआ है। अब धर्म को पहले की भाँति भेद उत्पन्न करने वाले विचारों और संस्थाओं के रूप में नहीं देखा जाता। धर्म के इस स्वरूप का मानव-जीवन पर प्रभाव घट रहा है। इसके स्थान पर धर्म को मानव की एकता और परस्पर प्रेम बढ़ानेवाले विशाल और सहिष्णु सदाचार के सिद्धान्तों के रूप में ही स्वीकार किया जाता है। धर्म के इस रूप से भौतिकवाद और विज्ञान को भी कोई द्वेष नहीं है। इसीलिये विज्ञान और भौतिकवाद के दृष्टिकोण में भी हम धर्म के प्रति परिवर्तन देखते हैं।

ऊपर के इस संक्षिप्त विचार के आधार पर हम अपने लिये नई सांस्कृतिक व्यवस्था के निर्माण के लिये कई आदर्श और प्रेरणायें निर्धारित कर सकते हैं। प्रथम तो यह कि हम दूसरों को समझने का प्रयत्न

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

करें, जिससे प्रेम और सहानुभूति की भावना बढ़ेगी और सांस्कृतिक तत्वों का आदान-प्रदान होगा। सांस्कृतिक एकरसता स्थापित करना कठिन होने के साथ-ही-साथ श्रेयस्कर भी नहीं है। दूसरे, हमें यह स्वीकार करना होगा कि सांस्कृतिक शान्ति और सुख के लिये आवश्यक है कि उसको एक मजबूत आधार-शिला मिले। यह सांसारिक सुख और समृद्धि के लिये व्यवस्था किये बिना संभव नहीं है। तीसरे, मनुष्य को केवल विचार और कार्य की स्वतंत्रता ही नहीं होनी चाहिये, उसे अपने व्यक्तित्व को विकसित करने की पूरी सुविधायें भी प्राप्त हों। व्यक्ति को राज्य के नियन्त्रण में दबा कर हम उसकी मौलिकता और रचनात्मकता को नष्ट कर देंगे। मानव-समाज की प्रगति बिना व्यक्ति की स्वतंत्रता के संभव नहीं है। इसीलिये यह भी आवश्यक हो जाता है कि संसार में प्रजातंत्र की सफलता के लिये प्रयत्न हो। प्रजातंत्र कोई एक शासन की पद्धति ही नहीं है, यह जीवन की एक विधि है। समाज और व्यक्ति तथा संस्कृति का सच्चा विकास प्रजातंत्रात्मक विधि के द्वारा प्राप्त सुविधाओं और स्वतंत्रता के वातावरण में ही संभव है। लेकिन इन सभी से ज्यादा आवश्यक है कि आध्यात्मिकता की प्रवृत्ति को समुचित अवसर मिले। वर्तमान परिस्थिति में जबकि

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पुराने आदर्श टूटते जा रहे हैं, आध्यात्मिकता का प्रकाश ही आदमी को अपने पुराने विचारों को समाप्त करके और अपनी बुरी प्रवृत्तियों से ऊपर उठने में सहायता देगा। आध्यात्म ही मनुष्य को प्रगति की नई प्रेरणा दे सकता है। इसी के द्वारा आदमी का अपने भविष्य में आशा और विश्वास का भाव बढ़ेगा। अध्यात्म ही भौतिकवाद और दूसरी प्रवृत्तियों के दोष को दूर कर सकता है। आध्यात्मिक विचार के द्वारा आदमी मानव-एकता की भावना को भी अधिक आसानी से स्वीकार कर सकता है और मानव-प्रेम के लिये कार्य कर सकता है। आध्यात्मिक प्रेरणा से हमारा तात्पर्य धर्म की संकुचित परिभाषा से नहीं है। सभी धर्मों और देशों ने आध्यात्म का महत्व स्वीकार किया है। आध्यात्मिकता तप या संन्यास का जीवन नहीं है। यह तो आन्तरिक शक्ति से दमकता हुआ परिवर्तित जीवन है। आध्यात्मिकता अहंभाव को समाप्त कर सर्वत्र व्याप्त हो जाती है। विश्व की संस्कृति जिस रोग से पीड़ित है, वह आत्मा का रोग है। हमें शाश्वत और स्थायी आदर्शों को खोजना होगा, जिससे हमारा जीवन व्यवस्थित हो सके और उसे अपनी प्रगति के लिये कुछ लक्ष्य, कुछ उदार प्रेरणायें और कुछ सुमधुर प्रभाव मिल सकें।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

Sanskriti Aur Sanskritiyan

(A Book on General Culture)

★

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पी० बॉक्स नं० ७०, पिशाचमोचन

वाराणसी–१

मुद्रक : विद्यामन्दिर प्रेस (प्राइवेट) लि., मानमन्दिर, वाराणसी–१

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi